bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2080 युगाब्द 5125 कुल पृष्ठ –32 जनवरी द्वितीय – 12

वर्तमान

कमल ज्योति

रामोत्सव अयोध्या धाम

₹20

विधान परिषद निर्वाचित दारा सिंह चौहान जी का नामांकन

विकसित भारत संकल्प यात्रा

देव सील स्वच्छता अभियान

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

वसुधैव कुटुम्बकम्!

राम नेति भी, नीति भी राम

रामलला अपने नव्य, भव्य एवं दिव्य मंदिर में प्रतिष्ठित हुए । संपूर्ण विश्व में उल्लास व उत्सव मनाया गया, दसों दिशाएँ श्री राम नाम के जयकार से गुंजीत थीं। चहुं ओर हर्ष था।

सनातनी रामधुन पर नाच रहे हैं । यह भारतीय जनमानस में प्रभु राम का स्थान है, प्रभाव है उनके प्रति स्नेह है, समर्पण है। राम ही आधार हैं । जन्मभूमि पर बने भव्य दिव्य मंदिर में प्रभु श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही करोड़ों आस्थावान हिन्दुओं का श्री राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ संपन्न हुआ है। सनातन समाज की अभिलाषा पूरी हुई है। अयोध्या में प्रभु श्री रामलला के विराजमान होने से हिंदू सनातन समाज को एक नई ऊर्जा मिली है जो उसको अनंतकाल तक चैतन्य रखेगी। सनातन धर्म तथा संस्कृति की पुनर्स्थापना के इस अद्वितीय उत्सव ने राष्ट्रीय चेतना को एक नई दृष्टि दी है।

प्रभु श्री राम के अभिवादन के लिए संपूर्ण हिंदू सनातन समाज एकाकार हो गया और दीपोत्सव मनाने के लिए जात–पात, ऊंच–नीच की सभी दीवारें ढह गयीं। जो लोग पहले फोन पर राम–राम कहने पर हिचकते थे अब फोन पर राम–राम, जय श्री रामलला बोलकर अभिवादन कर रहे हैं। निश्चय ही अयोध्या में प्रभु श्री रामलला के विराजमान हो जाने और समाज के इस उल्लास को देखने के पश्चात हमारे पूर्वज भी अपने दिव्य धाम में आनंद मना रहे होंगे । रामराज्य का स्वप्न साकार होता दिख रहा है। आध्यात्मिक चेतना का उदय हुआ है। भगवान राम धर्म, जाति, देश और मानव निर्मित अन्य पहचानों से परे हैं। इन विषयों से जुड़े मतभेदों को भूलकर श्री राम के आदर्शों पर चलना ही रामराज्य की ओर बढ़ना है। प्रभु श्रीराम का जीवन व उनके आदर्श ही भारत की विश्व का नेतृत्व करने वाला राष्ट्र बनने की आकांक्षा पूरी कर सकते हैं।

प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या नगरी देवलोक सी लग रही है । सनातन की मर्यादा का स्मरण कराते हुए प्रधानमंत्री जी ने इसे विनय का पल मानने का आह्वान किया है साथ ही इस दिन को भारत के लिए मानसिक व वैचारिक गुलामी से स्वतंत्रता दिलाने का मार्ग प्रशस्त करने वाला दिन भी बताया।

अब हमें वास्तविक रामराज्य की ओर अग्रसर होना है। रामराज्य की सार्थकता इसी में है कि सबके कल्याण की चिंता की जाये। अभी केवल रामराज्य की स्थापना का ही चिंतन मनन करना है और राष्ट्र को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना है और बिलकुल उसी तरह जिस प्रकार से रामयुग था। प्रभु श्री रामलला के आदर्शों का सतत प्रचार करना है ताकि हमारा समाज और अधिक मजबूती से उभर सके। किसी को यह नहीं सोचना कि वो छोटा है, राम जी की गिलहरी को ध्यान में रखना है। गुलामी की मानसिकता वाली विचारधारा की बीमारी से त्रस्त आई.एन.डी.आई.ए. के लोगों को यह अविस्मरणीय क्षण या घटना भले ही मोदी का चुनावी प्रोपेगंडा लग रही हो किंतु प्रत्येक रामभक्त हिंदू को जो 500 साल के लंबे समय से प्रतीक्षारत था, जिस रामजन्मभूमि के लिए उसके पुरखों ने असंख्य बलिदान दिए फिर भी जो धैर्य से अपनी लड़ाई लड़ता रहा उसके लिए यह दिन न भूतो न भविष्यति वाला है। भगवान राम लला के लिए लाखों भक्तों की प्रतिदिन प्रतिक्षा रह रही है। दर्शन सुगमता से हो रहे हैं। मोक्षदायिनी नगरी अयोध्या पुनः श्रीयुक्त हो कर ''राष्ट्रोदय'' को देख रही है। पुनः भारत अपनी सांस्कृतिक स्वरूप को प्राप्त कर रहा है। जो विकसित भारत की राह है।

भारत लोकतंत्र की जननी : द्रोपदी

राष्ट्रपति संबोधन

नमस्कार!

पचहत्तरवें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं। जब मैं पीछे मुड़कर यह देखती हूं कि विपरीत परिस्थितियों के बावजूद हमने कितनी लंबी यात्रा की है, तब मेरा हृदय गर्व से भर जाता है। हमारे गणतंत्र का पचहत्तरवां वर्ष, कई अर्थों में, देश की यात्रा में एक ऐतिहासिक पड़ाव है। यह उत्सव मनाने का विशेष अवसर है, जैसे हमने, स्वाधीनता के 75 वर्ष पूरे होने पर, 'आजादी का अमृत महोत्सव' के दौरान अपने देश की अतुलनीय महानता और विविधतापूर्ण संस्कृति का उत्सव मनाया था।

कल के दिन हम संविधान के प्रारंभ का उत्सव मनाएंगे। संविधान की प्रस्तावना "हम, भारत के लोग", इन शब्दों से शुरू होती है। ये शब्द, हमारे संविधान के मूल भाव अर्थात् लोकतंत्र को रेखांकित करते हैं। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था, लोकतंत्र की पश्चिमी अवधारणा से कहीं अधिक प्राचीन है। इसीलिए भारत को "लोकतंत्र की जननी" कहा जाता है।

एक लंबे और कठिन संघर्ष के बाद 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश विदेशी शासन से मुक्त हो गया। लेकिन, उस समय भी, देश में सुशासन तथा देशवासियों में निहित क्षमताओं और प्रतिभाओं को उन्मुक्त विस्तार देने के लिए, उपयुक्त मूलभूत सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को स्वरूप प्रदान करने का कार्य चल ही रहा था। संविधान सभा ने सुशासन के सभी पहलुओं पर लगभग तीन वर्ष तक विस्तृत चर्चा की और हमारे राष्ट्र के महान आधारभूत ग्रंथ, यानी भारत के संविधान की रचना की। आज के दिन हम सब देशवासी उन दूरदर्शी जन–नायकों और अधिकारियों का कृतज्ञता–पूर्वक स्मरण करते हैं जिन्होंने हमारे भव्य और प्रेरक संविधान के निर्माण में अमूल्य योगदान दिया था।

हमारा देश स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर बढ़ते हुए अमृत काल के प्रारंभिक दौर से गुजर रहा है। यह एक युगांतरकारी परिवर्तन का कालखंड है। हमें अपने देश को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का सुनहरा अवसर मिला है। हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक नागरिक का योगदान, महत्वपूर्ण होगा। इसके लिए मैं सभी देशवासियों से संविधान में निहित हमारे मूल कर्तव्यों का पालन करने का अनुरोध करूंगी। ये कर्तव्य, आजादी के 100 वर्ष पूरे होने तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में, प्रत्येक नागरिक के आवश्यक दायित्व हैं। इस संदर्भ में मुझे महात्मा गांधी का स्मरण होता है। बापू ने ठीक ही कहा था, "जिसने केवल अधिकारों को चाहा है, ऐसी कोई भी प्रजा उन्नति नहीं कर सकी है। केवल वही प्रजा उन्नति कर सकी है जिसने कर्तव्य का धार्मिक रूप से पालन किया है।"

मेरे प्यारे देशवासियो,

गणतंत्र दिवस, हमारे आधारभूत मूल्यों और सिद्धांतों को स्मरण करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। जब हम, उनमें से किसी एक बुनियादी सिद्धान्त पर चिंतन करते हैं, तो स्वाभाविक रूप से अन्य सभी सिद्धांतों पर भी हमारा ध्यान जाता है। संस्कृति, मान्यताओं और परम्पराओं की विविधता, हमारे लोकतंत्र का अंतर्निहित आयाम है। हमारी विविधता का यह उत्सव, समता पर आधारित है जिसे न्याय द्वारा संरक्षित किया जाता है। यह सब, स्वतंत्रता के वातावरण में ही संभव हो पाता है। इन मूल्यों और सिद्धांतों की समग्रता ही हमारी भारतीयता का आधार है। डॉक्टर बी. आर. आंबेडकर के प्रबुद्ध मार्गदर्शन में प्रवाहित, इन मूलभूत जीवन–मूल्यों और सिद्धांतों में रची–बसी संविधान की भावधारा ने, सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करने के लिए सामाजिक न्याय के मार्ग पर हमें अडिग बनाए रखा है।

मैं यह उल्लेख करना चाहूंगी कि सामाजिक न्याय के लिए अनवरत युद्धरत रहे, श्री कर्पूरी ठाकुर जी की जन्म शताब्दी का उत्सव कल ही संपन्न हुआ है। कर्पूरी जी पिछड़े वर्गों के सबसे महान पक्षकारों में से एक थे जिन्होंने अपना सारा जीवन उनके कल्याण के लिए समर्पित कर दिया था। उनका जीवन एक संदेश था। अपने योगदान से सार्वजनिक जीवन को समृद्ध बनाने के लिए, मैं कर्पूरी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

हमारे गणतंत्र की मूल भावना से एकजुट होकर 140 करोड़ से अधिक भारतवासी एक कुटुंब के रूप में रहते हैं। दुनिया के

सबसे बड़े इस कुटुंब के लिए, सह–अस्तित्व की भावना, भूगोल द्वारा थोपा गया बोझ नहीं है, बल्कि सामूहिक उल्लास का सहज स्रोत है, जो हमारे गणतंत्र दिवस के उत्सव में अभिव्यक्त होता है।

इस सप्ताह के आरंभ में हम सबने अयोध्या में प्रभु श्रीराम के जन्मस्थान पर निर्मित भव्य मंदिर में स्थापित मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का ऐतिहासिक समारोह देखा। भविष्य में जब इस घटना को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाएगा, तब इतिहासकार, भारत द्वारा अपनी सभ्यतागत विरासत की निरंतर खोज में युगांतरकारी आयोजन के रूप में इसका विवेचन करेंगे। उचित न्यायिक प्रक्रिया और देश के उच्चतम न्यायालय के निर्णय के बाद, मंदिर का निर्माण कार्य आरंभ हुआ। अब यह एक भव्य संरचना के रूप में शोभायमान है। यह मंदिर न केवल जन–जन की आस्था को व्यक्त करता है बल्कि न्यायिक प्रक्रिया में हमारे देशवासियों की अगाध आस्था का प्रमाण भी है।

हमारे राष्ट्रीय त्योहार ऐसे महत्वपूर्ण अवसर होते हैं जब हम अतीत पर भी दृष्टिपात करते हैं और भविष्य की ओर भी देखते हैं। पिछले गणतंत्र दिवस के बाद के एक वर्ष पर नजर डालें तो हमें बहुत प्रसन्नता होती है। भारत की अध्यक्षता में दिल्ली में ळ20 शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी। ळ20 से जुड़े आयोजनों में जन–सामान्य की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन आयोजनों में विचारों और सुझावों का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर नहीं बल्कि नीचे से ऊपर की ओर था। उस भव्य आयोजन से यह सीख भी मिली है कि सामान्य नागरिकों को भी ऐसे गहन तथा अंतर–राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे में भागीदार बनाया जा सकता है जिसका प्रभाव अंततः उनके अपने भविष्य पर पड़ता है। G20 शिखर सम्मेलन के माध्यम से ळसवइंसˆवनजी की आवाज के रूप में भारत के अभ्युदय को भी बढ़ावा मिला, जिससे अंतर–राष्ट्रीय संवाद की प्रक्रिया में एक आवश्यक तत्व का समावेश हुआ।

जब संसद ने ऐतिहासिक महिला आरक्षण विधेयक पारित किया तो हमारा देश, स्त्री–पुरुष समानता के आदर्श की ओर आगे बढ़ा। मेरा मानना है कि 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम', महिला सशक्तीकरण का एक क्रांतिकारी माध्यम सिद्ध होगा। इससे हमारे शासन की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने में भी बहुत सहायता मिलेगी। जब सामूहिक महत्व के मुद्दों पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी, तब हमारी प्रशासनिक प्राथमिकताओं का जनता की आवश्यकताओं के साथ बेहतर सामंजस्य बनेगा।

इसी अवधि में भारत, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के क्षेत्र पर उतरने वाला पहला देश बना। चंद्रयान–3 के बाद ISRO ने एक सौर मिशन भी शुरू किया। हाल ही में आदित्य L1 को सफलतापूर्वक 'Halo Orbit' में स्थापित किया गया है। भारत ने अपने पहले एक्स–रे Polarimeter Satellite, जिसे एक्सपोसैट कहा जाता है, के प्रक्षेपण के साथ नए साल की शुरुआत की है। यह सैटेलाइट, अंतरिक्ष के 'ब्लैक होल' जैसे रहस्यों का अध्ययन करेगा। वर्ष 2024 के दौरान अन्य कई अंतरिक्ष अभियानों की योजना बनाई गई है। यह प्रसन्नता का विषय है कि भारत की अंतरिक्ष यात्रा में अनेक नई उपलब्धियां हासिल की जाने वाली हैं। हमारे प्रथम मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम, **'गगनयान मिशन'** की तैयारी सुचारु रूप से आगे बढ़ रही है। हमें अपने वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों पर सदैव गर्व रहा है, लेकिन अब ये पहले से कहीं अधिक ऊंचे लक्ष्य तय कर रहे हैं और उनके अनुरूप परिणाम भी हासिल कर रहे हैं। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का उद्देश्य, संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका को और अधिक विस्तार तथा गहराई प्रदान करना है। ISRO के कार्यक्रम के प्रति देशवासियों में जो उत्साह दिखाई देता है उससे नई आशाओं का संचार हो रहा है। अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में नई उपलब्धियों ने, युवा पीढ़ी की कल्पना शक्ति को नए पंख दिए हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे बच्चों और युवाओं में, बड़े पैमाने पर, विज्ञान के प्रति रुझान बढ़ेगा तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होगा। अन्तरिक्ष विज्ञान की इन उपलब्धियों से युवाओं, विशेषकर युवा महिलाओं को यह प्रेरणा मिलेगी कि वे, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को अपना कार्यक्षेत्र बनाएं।

आज का भारत, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। सुदृढ़ और स्वस्थ अर्थव्यवस्था इस आत्मविश्वास का कारण भी है और परिणाम भी। हाल के वर्षों में, सकल घरेलू उत्पाद की हमारी वृद्धि दर, प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक रही है। ठोस आकलन के आधार पर हमें पूरा विश्वास है कि यह असाधारण प्रदर्शन, वर्ष 2024 और उसके बाद भी जारी रहेगा। यह बात मुझे विशेष रूप से उल्लेखनीय लगती है कि जिस दूरगामी योजना–दृष्टि से अर्थव्यवस्था को गति प्राप्त हुई है, उसी के तहत विकास को हर दृष्टि से समावेशी बनाने के लिए सुविचारित जन कल्याण अभियानों को भी बढ़ावा दिया गया है। महामारी के दिनों में, समाज के कमजोर वर्गों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराने के लिए लागू योजनाओं का दायरा, सरकार ने बढ़ा दिया था। बाद में, कमजोर वर्गों की आबादी को संकट से उबरने में सहायता प्रदान करने हेतु इन कल्याणकारी योजनाओं को जारी रखा गया। इस पहल को और अधिक विस्तार देते हुए, सरकार ने 81 करोड़ से अधिक लोगों को अगले पांच साल तक मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। संभवतः, इतिहास में यह अपनी तरह का सबसे बड़ा जन–कल्याण कार्यक्रम है।

साथ ही, सभी नागरिकों के जीवन–यापन को सुगम बनाने के लिए अनेक समयबद्ध योजनाएं भी कार्यान्वित की जा रही हैं। घर में सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल की उपलब्धता से लेकर अपना घर होने के सुरक्षा–जनक अनुभव तक, ये सभी

बुनियादी न्यूनतम आवश्यकताएं हैं, न कि विशेष सुविधाएं। ये मुद्दे, किसी भी राजनीतिक या आर्थिक विचारधारा से परे हैं और इन्हें मानवीय दृष्टिकोण से ही देखा जाना चाहिए। सरकार ने, केवल जन–कल्याण योजनाओं का विस्तार और संवर्धन ही नहीं किया है, अपितु जन–कल्याण की अवधारणा को भी नया अर्थ प्रदान किया है। हम सभी उस दिन गर्व का अनुभव करेंगे जब भारत ऐसे कुछ देशों में शामिल हो जाएगा जहां शायद ही कोई बेघर हो। समावेशी कल्याण की इसी सोच के साथ 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' में डिजिटल विभाजन को पाटने और वंचित वर्गों के विद्यार्थियों के हित में, समानता पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के निर्माण को समुचित प्राथमिकता दी जा रही है। **'आयुष्मान भारत योजना'** के विस्तारित सुरक्षा कवच के तहत सभी लाभार्थियों को शामिल करने का लक्ष्य है। इस संरक्षण से गरीब और कमजोर वर्गों के लोगों में एक बहुत बड़ा विश्वास जगा है।

हमारे खिलाड़ियों ने अंतर–राष्ट्रीय मंचों पर भारत का मान बढ़ाया है। पिछले साल आयोजित एशियाई खेलों में, हमने 107 पदकों के नए कीर्तिमान के साथ इतिहास रचा और एशियाई पैरा खेलों में हमने 111 पदक जीते। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि महिलाएं, हमारी पदक–तालिका में बहुत प्रभावशाली योगदान दे रही हैं। हमारे श्रेष्ठ खिलाड़ियों की सफलता से बच्चों को विभिन्न खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरणा मिली है, जिससे उनका आत्मविश्वास बहुत बढ़ा है। मुझे विश्वास है कि नए आत्मविश्वास से भरपूर हमारे खिलाड़ी, आगामी पेरिस ओलिंपिक में और भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

प्यारे देशवासियो,

हाल के दौर में विश्व में अनेक स्थलों पर लड़ाइयां हो रही हैं और दुनिया के बहुत से हिस्से हिंसा से पीड़ित हैं। जब दो परस्पर विरोधी पक्षों में से प्रत्येक मानता है कि केवल उसी की बात सही है और दूसरे की बात गलत है, तो ऐसी स्थिति में समाधान–परक तर्क के आधार पर ही आगे बढ़ना चाहिए। दुर्भाग्य से, तर्क के स्थान पर, आपसी भय और पूर्वाग्रहों ने भावावेश को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण अनवरत हिंसा हो रही है। बड़े पैमाने पर मानवीय त्रासदियों की अनेक दुखद घटनाएं हुई हैं, और हम सब इस मानवीय पीड़ा से अत्यंत व्यथित हैं। ऐसी परिस्थितियों में, हमें भगवान बुद्ध के सारगर्भित शब्दों का स्मरण होता है:

न हि वेरेन वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचनम्।
अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो।।

इसका भावार्थ है:

"यहां कभी भी शत्रुता को शत्रुता के माध्यम से शांत नहीं किया जाता है, बल्कि अ–शत्रुता के माध्यम से शांत किया जाता है। यही शाश्वत नियम है।"

वर्धमान महावीर और सम्राट अशोक से लेकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तक, भारत ने सदैव एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि अहिंसा केवल एक आदर्श मात्र नहीं है जिसे हासिल करना कठिन हो, बल्कि यह एक स्पष्ट संभावना है। यही नहीं, अपितु अनेक लोगों के लिए यह एक जीवंत यथार्थ है। हम आशा करते हैं कि संघर्षों में उलझे क्षेत्रों में, उन संघर्षों को सुलझाने तथा शांति स्थापित करने के मार्ग खोज लिए जाएंगे।

वैश्विक पर्यावरण संकट से उबरने में भी भारत का प्राचीन ज्ञान, विश्व–समुदाय का मार्गदर्शन कर सकता है। भारत को ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों को बढ़ावा देने में अग्रणी योगदान देते हुए और Global Climate Action को नेतृत्व प्रदान करते हुए देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। भारत ने, पर्यावरण के प्रति सचेत जीवन–शैली अपनाने के लिए, 'LiFE Movement' शुरू किया है। हमारे देश में जलवायु परिवर्तन के मुद्दे का सामना करने में व्यक्तिगत व्यवहार–परिवर्तन को प्राथमिकता दी जा रही है तथा विश्व समुदाय द्वारा इसकी सराहना की जा रही है। हर स्थान के निवासी अपनी जीवन–शैली को प्रकृति के अनुरूप ढालकर अपना योगदान दे सकते हैं और उन्हें ऐसा करना ही चाहिए। इससे, न केवल भावी पीढ़ियों के लिए पृथ्वी का संरक्षण करने में सहायता मिलेगी बल्कि, जीवन की गुणवत्ता भी बढ़ेगी।

वास्तव में, हमारे युवाओं के आत्मविश्वास के बल पर ही भावी भारत का निर्माण हो रहा है। युवाओं के मनो–मस्तिष्क को संवारने का कार्य हमारे शिक्षक–गण करते हैं जो सही अर्थों में राष्ट्र का भविष्य बनाते हैं। मैं अपने उन किसानों और मजदूर भाई–बहनों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं जो, चुपचाप मेहनत करते हैं तथा देश के भविष्य को बेहतर बनाने में बहुत बड़ा योगदान देते हैं। गणतन्त्र दिवस के पावन अवसर की पूर्व संध्या पर, सभी देशवासी हमारे सशस्त्र बलों, पुलिस और अर्ध–सैन्य बलों का भी कृतज्ञता–पूर्वक अभिनंदन करते हैं। उनकी बहादुरी और सतर्कता के बिना, हम उन प्रभावशाली उपलब्धियों को प्राप्त नहीं कर सकते थे जो हमने हासिल कर ली हैं।

अपनी वाणी को विराम देने से पहले, मैं न्यायपालिका और सिविल सेवाओं के सदस्यों को भी शुभकामनाएं देना चाहती हूं। विदेशों में नियुक्त भारतीय मिशनों के अधिकारियों और प्रवासी भारतीय समुदाय के लोगों को मैं गणतन्त्र दिवस की बधाई देती हूं। आइए, हम सब यथाशक्ति राष्ट्र और देशवासियों की सेवा में स्वयं को समर्पित करने का संकल्प करें। इस शुभ संकल्प को सिद्ध करने के प्रयास हेतु आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

धन्यवाद, जय हिन्द! जय भारत!

राम तो सबके हैं

राम लला की प्रतिष्ठा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का विचार है: नरेन्द्र

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के अयोध्या में नवनिर्मित श्री राम जन्मभूमि मंदिर में श्री राम लला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भाग लिया। श्री मोदी ने श्री राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण में योगदान देने वाले श्रमजीवियों से बातचीत की।

राम भक्तों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि सदियों के बाद आखिरकार हमारे राम आ गए हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इस अवसर पर नागरिकों को बधाई देते हुए कहा, "सदियों के धैर्य, अनगिनत बलिदान, त्याग और तपस्या के बाद, हमारे भगवान राम यहां हैं।" प्रधानमंत्री ने कहा कि 'गर्भ गृह' (आंतरिक गर्भगृह) के अंदर ईश्वरीय चेतना का अनुभव शब्दों में नहीं किया जा सकता है और उनका शरीर ऊर्जा से स्पंदित है और मन प्राण प्रतिष्ठा के क्षण के लिए समर्पित है। "हमारे राम लला अब तंबू में नहीं रहेंगे। यह दिव्य मंदिर अब उनका घर होगा", प्रधानमंत्री ने विश्वास और श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा कि आज की घटनाओं को देश और दुनिया भर के राम भक्तों द्वारा अनुभव किया जा सकता है। श्री मोदी ने कहा, "यह क्षण अलौकिक और पवित्र है, वातावरण, पर्यावरण और ऊर्जा हम पर भगवान राम के आशीर्वाद का प्रतीक है।" उन्होंने रेखांकित किया कि 22 जनवरी की सुबह का सूरज अपने साथ एक नई आभा लेकर आया है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि 22 जनवरी, 2024 केवल कैलेंडर की एक तारीख नहीं है, यह एक नए 'काल चक्र' का उद्‌गम है।" राम मंदिर के भूमि पूजन के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। निर्माण कार्य देख, देशवासियों में हर दिन एक नया विश्वास पैदा हो रहा था और विकास कार्यों की प्रगति से नागरिकों में नई ऊर्जा का संचार हुआ। आज हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, आज हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। प्रधानमंत्री ने कहा, "आज हमें सदियों के धैर्य की विरासत मिली है, आज हमें श्री राम का मंदिर मिला है।" उन्होंने जोर देकर कहा कि गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेकर, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि आज की तारीख की चर्चा आज से एक हजार साल बाद की जाएगी और यह भगवान राम का आशीर्वाद है कि हम इस महत्वपूर्ण अवसर के साक्षी हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, "दिन, दिशाएं, आकाश और हर चीज आज दिव्यता से भरी हुई है", उन्होंने कहा कि यह कोई ये समय, सामान्य समय नहीं है। ये काल के चक्र पर सर्वकालिक स्याही से अंकित हो रहीं अमिट स्मृति रेखाएँ हैं।

'प्रभु बिलोकि हरषे संत तुलसीदास पुरबासी।
जनित वियोग बिपति सब नासी।।

श्री राम के हर कार्य में पवनपुत्र हनुमान की उपस्थिति की चर्चा कहते हुए प्रधानमंत्री ने श्री हनुमान और हनुमान गढ़ी को नमन किया। उन्होंने लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और माता जानकी को भी प्रणाम किया। उन्होंने इस घटना पर दिव्य संस्थाओं की उपस्थिति को स्वीकार किया। प्रधानमंत्री ने आज का दिन देखने में हुई देरी के लिए प्रभु श्री राम से माफी मांगी और कहा कि आज वह कमी पूरी हो गई है, प्रभु राम निश्चित रूप से हमें क्षमा करेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा, 'त्रेता युग' में राम आगमन पर संत तुलसीदास ने लिखा, "प्रभु बिलोकि हरषे संत तुलसीदास

पुरबासी। जनित वियोग बिपति सब नासी। अर्थात्, प्रभु का आगमन देखकर ही सब अयोध्यावासी, समग्र देशवासी हर्ष से भर गए। उस कालखंड में तो वो वियोग केवल 14 वर्षों का था, तब भी इतना असह्य था। इस युग में तो अयोध्या और देशवासियों ने सैकड़ों वर्षों का वियोग सहा है। श्री मोदी ने आगे कहा, संविधान की मूल प्रति में श्रीराम मौजूद होने के बावजूद आजादी के बाद लंबी कानूनी लड़ाई लड़ी गई। प्रधानमंत्री ने न्याय की गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए भारत की न्यायपालिका को धन्यवाद दिया। उन्होंने भारत की न्यायपालिका का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि न्याय के पर्याय प्रभु राम का मंदिर भी न्याय बद्ध तरीके से ही बना।

प्रधानमंत्री ने बताया कि छोटे–छोटे गांवों समेत पूरे देश में जुलूस निकल रहे हैं और मंदिरों में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। "पूरा देश आज दिवाली मना रहा है। हर घर शाम को 'राम ज्योति' जलाने के लिए तैयार है", श्री मोदी ने कहा। राम सेतु के शुरुआती बिंदु अरिचल मुनाई की अपनी कल की यात्रा को याद करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि यह वह क्षण था जिसने काल चक्र को बदल दिया। प्रधानमंत्री ने उस क्षण की उपमा देते हुए कहा कि उन्हें विश्वास हो गया कि उसी तरह अब कालचक्र फिर बदलेगा और शुभ दिशा में बढ़ेगा। श्री मोदी ने बताया कि अपने 11 दिन के व्रत–अनुष्ठान के दौरान मैंने उन स्थानों का चरण स्पर्श करने का प्रयास किया, जहां प्रभु राम के चरण पड़े थे। चाहे वो नासिक का पंचवटी धाम हो, केरला का पवित्र त्रिप्रायर मंदिर हो, आंध्र प्रदेश में लेपाक्षी हो, श्रीरंगम में रंगनाथ स्वामी मंदिर हो, रामेश्वरम में श्री रामनाथस्वामी मंदिर हो, या फिर धनुषकोडि। प्रधानमंत्री ने समुद्र से सरयू नदी तक की यात्रा के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने आगे कहा, "सागर से सरयू तक की यात्रा का अवसर मिला। सागर से सरयू तक, हर जगह राम नाम का वही उत्सव भाव छाया हुआ है। प्रभु राम तो भारत की आत्मा के कण–कण से जुड़े हुए हैं। राम, भारतवासियों के अंतर्मन में विराजे हुए हैं। उन्होंनने कहा, हम भारत में कहीं भी, किसी की अंतरात्मा को छुएंगे तो इस एकत्व की अनुभूति होगी, और यही भाव सब जगह मिलेगा। इससे उत्कृष्ट, इससे अधिक, देश को समायोजित करने वाला सूत्र और क्या हो सकता है?

प्रधानमंत्री ने कई भाषाओं में श्रीराम कथा सुनने के अपने अनुभव को याद करते हुए कहा कि राम स्मृतियों, परम्पराओं में, सर्वत्र समाये हुए हैं। "हर युग में लोगों ने राम को जिया है। हर युग में लोगों ने अपने–अपने शब्दों में, अपनी–अपनी तरह से राम को अभिव्यक्त किया है। और ये रामरस, जीवन प्रवाह की तरह निरंतर बहता रहता है। रामकथा असीम है, रामायण भी अनंत हैं। राम के आदर्श, राम के मूल्य, राम की शिक्षाएं, सब जगह एक समान हैं"।

प्रधानमंत्री ने उन लोगों के बलिदान के लिए आभार व्यक्त किया जिन्होंने आज के दिन को संभव बनाया। उन्होंने संतों, कार सेवकों और राम भक्तों को श्रद्धांजलि दी।

प्रधानमंत्री ने कहा, "आज का अवसर उत्सव का क्षण तो है ही, लेकिन इसके साथ ही ये क्षण भारतीय समाज की परिपक्वता के बोध का क्षण भी है। हमारे लिए ये अवसर सिर्फ विजय का नहीं, विनय का भी है। प्रधानमंत्री ने इतिहास की गुत्थियां समझाते हुए कहा, दुनिया का इतिहास साक्षी है कि कई राष्ट्र अपने ही इतिहास में उलझ जाते हैं। लेकिन हमारे देश ने इतिहास की इस गांठ को जिस गंभीरता और भावुकता के साथ खोला है, वो ये बताती है कि हमारा भविष्य हमारे अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है।"

अयोध्या में, केवल श्रीराम के विग्रह रूप की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई है। ये श्रीराम के रूप में साक्षात् भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राण प्रतिष्ठा है। ये साक्षात् मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है। इन मूल्यों की, इन आदर्शों की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है।

प्रधानमंत्री ने विनाश करने वालों को याद करते हुए कहा कि ऐसे लोगों को हमारे सामाजिक भाव की पवित्रता का एहसास नहीं है। उन्होंने कहा, "रामलला के इस मंदिर का निर्माण भारतीय समाज की शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का भी प्रतीक है। हम देख रहे हैं, ये निर्माण किसी आग को नहीं, बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है। राम मंदिर समाज के हर वर्ग को एक उज्जवल भविष्य के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा लेकर

आया है।", उन्होंने कहा, "राम आग नहीं है, राम ऊर्जा हैं। राम विवाद नहीं, राम समाधान हैं। राम सिर्फ हमारे नहीं हैं, राम तो सबके हैं। राम वर्तमान ही नहीं, राम अनंतकाल हैं।"

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि पूरी दुनिया प्राण प्रतिष्ठा से जुड़ी है और राम की सर्वव्यापकता को देखा जा सकता है। इसी तरह के उत्सव कई देशों में देखे जा सकते हैं और अयोध्या का उत्सव रामायण की वैश्विक परंपराओं का उत्सव बन गया है। उन्होंने कहा, "राम लला की प्रतिष्ठा 'वसुधैव कुटुंबकम' का विचार है।"

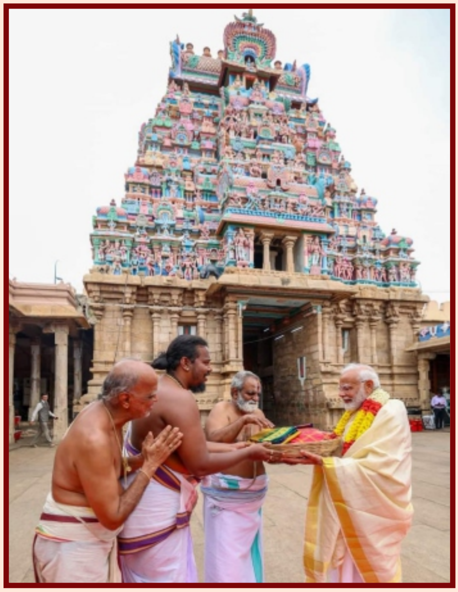

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जोर देकर कहा कि आज अयोध्या में, केवल श्रीराम के विग्रह रूप की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई है। ये श्रीराम के रूप में साक्षात् भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राण प्रतिष्ठा है। ये साक्षात् मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है। इन मूल्यों की, इन आदर्शों की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है। सर्वे भवन्तु सुखिनः ये संकल्प हम सदियों से दोहराते आए हैं। आज उसी संकल्प को राम मंदिर के रूप में साक्षात् आकार मिला है। ये राम के रूप में राष्ट्र चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत का आधार, विचार, विधान, चेतना, चिंतन, प्रतिष्ठा और भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नीति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं। और इसलिए, जब राम की प्रतिष्ठा होती है, तो उसका प्रभाव वर्षों या शताब्दियों तक ही नहीं होता। उसका प्रभाव हजारों वर्षों के लिए होता है। महर्षि वाल्मीकि को उद्धृत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा– राज्यम् दश सहस्राणि प्राप्य वर्षाणि राघवः। अर्थात, राम दस हजार वर्षों के लिए राज्य पर प्रतिष्ठित हुए। यानी हजारों वर्षों के लिए रामराज्य स्थापित हुआ। जब त्रेता में राम आए थे, तब हजारों वर्षों के लिए राम राज्य की स्थापना हुई थी। हजारों वर्षों तक राम विश्व पथ प्रदर्शन करते रहे थे।

प्रधानमंत्री ने प्रत्येक राम भक्त से भव्य राम मंदिर के साकार होने के बाद आगे के रास्ते के बारे में आत्मनिरीक्षण करने को कहा। "आज मैं सच्चे दिल से महसूस कर रहा हूं कि समय का चक्र बदल रहा है। यह एक सुखद संयोग है कि हमारी पीढ़ी को इस महत्वपूर्ण पथ के वास्तुकार के रूप में चुना गया है।"

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वर्तमान युग के महत्व को रेखांकित किया और अपनी पंक्ति 'यही समय है, सही समय है' दोहराई। "हमें अगले एक हजार वर्षों के लिए भारत की नींव रखनी है। प्रधानमंत्री ने देशवासियों का आह्वान किया कि मंदिर से आगे बढ़ते हुए, अब हम सभी देशवासी इसी क्षण से एक मजबूत, सक्षम, भव्य और दिव्य भारत के निर्माण की शपथ लें। उन्होंने कहा, इसके लिए जरूरी है कि राष्ट्र की अंतरात्मा में राम का आदर्श रहे।

प्रधानमंत्री ने देशवासियों से देव से देश, राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार करने को कहा। उन्होंने उनसे श्री हनुमान की सेवा, भक्ति और समर्पण से सीख लेने को कहा। उन्होंने कहा, "हर भारतीय की भक्ति, सेवा और समर्पण की ये भावना ही सक्षम, भव्य और दिव्य भारत का आधार बनेगी।" प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि हर भारतीय के हृदय में माता शबरी के विश्वास के पीछे की भावना कि 'राम आएंगे' ही भव्य समर्थ और दिव्य भारत का आधार बनेगी। निषादराज के प्रति राम के स्नेह की गहराई और मौलिकता का जिक्र करने से पता चलता है कि सभी एक हैं और एकता और एकजुटता की यही भावना सक्षम, भव्य और दिव्य भारत का आधार बनेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज देश में निराशा के लिए रत्ती भर भी स्थान नहीं है। प्रधानमंत्री ने गिलहरी की कहानी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो लोग खुद को छोटा और सामान्य मानते हैं उन्हें गिलहरी के योगदान को याद रखना चाहिए।

गिलहरी का स्मरण ही हमें हमारी इस हिचक को दूर करेगा, हमें सिखाएगा कि छोटे–बड़े हर प्रयास की अपनी ताकत होती है, अपना योगदान होता है। और सबके प्रयास की यही भावना, समर्थ–सक्षम, भव्य–दिव्य भारत का आधार बनेगी। प्रधानमंत्री ने कहा, यही भगवान से देश की चेतना और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार है"।

अत्यधिक ज्ञान और अपार शक्ति रखने वाले लंका के शासक रावण से युद्ध करते समय अपनी आसन्न हार के बारे में जानने वाले जटायु की निष्ठा पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि ऐसे कर्तव्य की पराकाष्ठा ही सक्षम और दिव्य भारत का आधार है। श्री मोदी ने जीवन का हर पल राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित करने का संकल्प लेते हुए कहा, "राम के काम के साथ, राष्ट्र के काम के साथ, समय का हर क्षण, शरीर का हर कण राम के समर्पण को राष्ट्र के प्रति समर्पण के लक्ष्य के साथ जोड़ देगा।

स्वयं से ऊपर उठकर जाने के अपने विषय को जारी रखते हुए, प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भगवान राम की हमारी पूजा पूरी सृष्टि के लिए होनी चाहिए, " ये पूजा, अहम से उठकर वयम के लिए होनी चाहिए। उन्होंने कहा, हमारे प्रयास विकसित भारत के निर्माण के लिए समर्पित होने चाहिए।

वर्तमान अमृत काल और युवा जनसांख्यिकी का उल्लेख करते हुए, प्रधानमंत्री ने देश के विकास के लिए कारकों के सही संयोजन का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री ने युवा पीढ़ी से कहा कि वे अपनी मजबूत विरासत का सहारा लें और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें। प्रधानमंत्री ने कहा, "भारत परंपरा की शुद्धता और आधुनिकता की अनंतता, दोनों के मार्ग पर चलकर समृद्धि के लक्ष्य तक पहुंचेगा।"

प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि भविष्य सफलताओं और उपलब्धियों के लिए समर्पित है और भव्य राम मंदिर भारत के उत्कतर्ष और उदय का साक्षी बनेगा। प्रधानमंत्री ने कहा, "यह भव्य राम मंदिर विकसित भारत के उत्थान का गवाह बनेगा।" प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा, ये मंदिर सिखाता है कि अगर लक्ष्य, सत्य प्रमाणित हो, अगर लक्ष्य, सामूहिकता और संगठित शक्ति से जन्मा हो, तब उस लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं है। "यह भारत का समय है और भारत आगे बढ़ने जा रहा है। सदियों के इंतजार के बाद हम यहां पहुंचे हैं। शताब्दियों की प्रतीक्षा के बाद हम यहां पहुंचे हैं। हम सब ने इस युग का, इस कालखंड का इंतजार किया है। अब हम रुकेंगे नहीं। हम विकास की ऊंचाई पर जाकर ही रहेंगे।" प्रधानमंत्री ने राम लल्ला के चरणों में अपनी श्रद्धा अर्पित की और शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर अन्य लोगों के अलावा उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत और श्री राम जन्मभूमि तीर्थ

झलकियां

ऐतिहासिक प्राण प्रतिष्ठा समारोह में देश के सभी प्रमुख आध्यात्मिक और धार्मिक संप्रदायों के प्रतिनिधियों और विभिन्न आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधियों सहित जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों की भागीदारी देखी गई।

भव्य श्री राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण पारंपरिक नागर शैली में किया गया है। इसकी लंबाई (पूर्व–पश्चिम) 380 फीट है; चौड़ाई 250 फीट और ऊंचाई 161 फीट है; और यह कुल 392 स्तंभों और 44 दरवाजों द्वारा समर्थित है। मंदिर के स्तंभों और दीवारों पर हिंदू देवी–देवताओं और देवियों की मूर्तियों का गूढ़ चित्रण है। भूतल पर मुख्य गर्भगृह में भगवान श्री राम के बचपन के स्वरूप (श्री राम लला की मूर्ति) को रखा गया है। मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्वी दिशा में स्थित है, जहाँ सिंह द्वार के माध्यम से 32 सीढ़ियाँ चढ़कर पहुंचा जा सकता है। मंदिर में कुल पाँच मंडप (हॉल) हैं दृ नृत्य मंडप, रंग मंडप, सभा मंडप, प्रार्थना मंडप और कीर्तन मंडप। मंदिर के पास एक ऐतिहासिक कुआँ (सीता कूप) है, जो प्राचीन काल का है। मंदिर परिसर के दक्षिण–पश्चिमी भाग में, कुबेर टीला में, भगवान शिव के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया है, साथ ही जटायु की एक मूर्ति भी स्थापित की गई है।

मंदिर की नींव का निर्माण रोलर–कॉम्पैक्ट कंक्रीट (आरसीसी) की 14 मीटर मोटी परत से किया गया है, जो इसे कृत्रिम चट्टान का रूप देता है। मंदिर में कहीं भी लोहे का प्रयोग नहीं किया गया है। जमीन की नमी से सुरक्षा के लिए ग्रेनाइट का उपयोग करके 21 फुट ऊंचे चबूतरे का निर्माण किया गया है। मंदिर परिसर में एक सीवेज उपचार संयंत्र, जल उपचार संयंत्र, अग्नि सुरक्षा के लिए जल आपूर्ति और एक स्वतंत्र बिजली स्टेशन है। मंदिर का निर्माण देश की पारंपरिक और स्वदेशी तकनीक से किया गया है।

भारत का गौरव लौट आया : भागवत

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने लोगों को संबोधित किया। इस दौरान भागवत ने कहा कि अयोध्या में भगवान राम की वापसी के साथ, भारत का गौरव लौट आया है।

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम संपन्न होने के बाद पीएम नरेंद्र मोदी, उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चीफ मोहन भागवत ने लोगों को संबोधित किया। अपने संबोधन में आरएसएस ने देशवासियों को एक बड़ी सलाह दी है और कुछ जिम्मेदारियां भी सौंपी हैं। अपने संबोधन में भगवत ने पीएम नरेंद्र मोदी की भी जमकर तारीफ की। मोहन भागवत ने संबोधन में कहा, "आज अयोध्या में रामलला के साथ भारत का गौरव लौट आया है। समूचे विश्व को कोविड जैसे त्रासदी से राहत देने वाला एक नया भारत खड़ा होकर रहेगा। आज का कार्यक्रम इसी प्रतीक है।'

आज रामलला वापस फिर से आए हैं, पांच सौ वर्ष के बाद। आज अयोध्या में रामलला के साथ भारत का स्वर लौट कर आया है। पूरे विश्व को त्रासदी से राहत देने वाला एक नया भारत खड़ा होके रहेगा। आज का कार्यक्रम इसका प्रतीक है।

जोश की बातों में होश की बातें करने का काम मुझे सौंपा जाता है। श्री रामलला तो आ गए, अब रामराज्य लाने की जिम्मेदारी रामभक्तों की है। प्रधानमंत्री जी ने तप किया, अब हमें भी तप करना है। राम राज कैसा था, यह याद रखना है। हम भी भारत वर्ष की संतानें हैं। कोटि–कोटि कंठ हमारे हैं, जो जयगान करते हैं।

हमें अच्छा व्यवहार रखने का तप–आचरण करना होगा। हमें भी सारे कलह को विदाई देनी होगी। छोटे–छोटे परस्पर मत रहते हैं, छोटे–छोटे विवाद रहते हैं। उसे लेकर लड़ाई करने की आदत छोड़नी पड़ेगी।

आगे संघ प्रमुख ने कहा कि सत्य कहता है कि सभी घटकों में राम हैं। हमें समन्वय से चलना होगा। हम सबके लिए चलते हैं,

जिनके त्याग, तपस्या, प्रयासों से आज हम यह स्वर्ण दिवस देख रहे हैं, उनका स्मरण प्राण–प्रतिष्ठा के संकल्प में हमने किया।

सब हमारे हैं, इसलिए हम चल पाते हैं। आपस में समन्वय रखकर व्यवहार रखना ही सत्य का आचरण है। करुणा दूसरा कदम है, जिसका मतलब है सेवा और परोपकार।

मन्दिर वहीं बना है, सौगन्ध जहाँ की खाई थी : योगी

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हर मन में राम नाम हैं। हर आंख हर्ष और संतोष के आंसू से भीगा है। हर जिह्वा राम–राम जप रही है। रोम रोम में राम रमे हैं। पूरा राष्ट्र राममय है। ऐसा लगता है हम त्रेतायुग में आ गए हैं।

अयोध्या में आखिर रामलला विराजमान हो गए। पूरे विधि–विधान के साथ भगवान के बाल रूप की प्राण प्रतिष्ठा हुई। इसी बीच रामलला की मूर्ति की बेहद खास तस्वीरें सामने आई हैं। शृंगार युक्त मूर्ति में भगवान के पूरे स्वरूप को देखा जा सकता है। तस्वीर में रामलला माथे पर तिलक लगाए बेहद सौम्य मुद्रा में दिख रहे हैं।

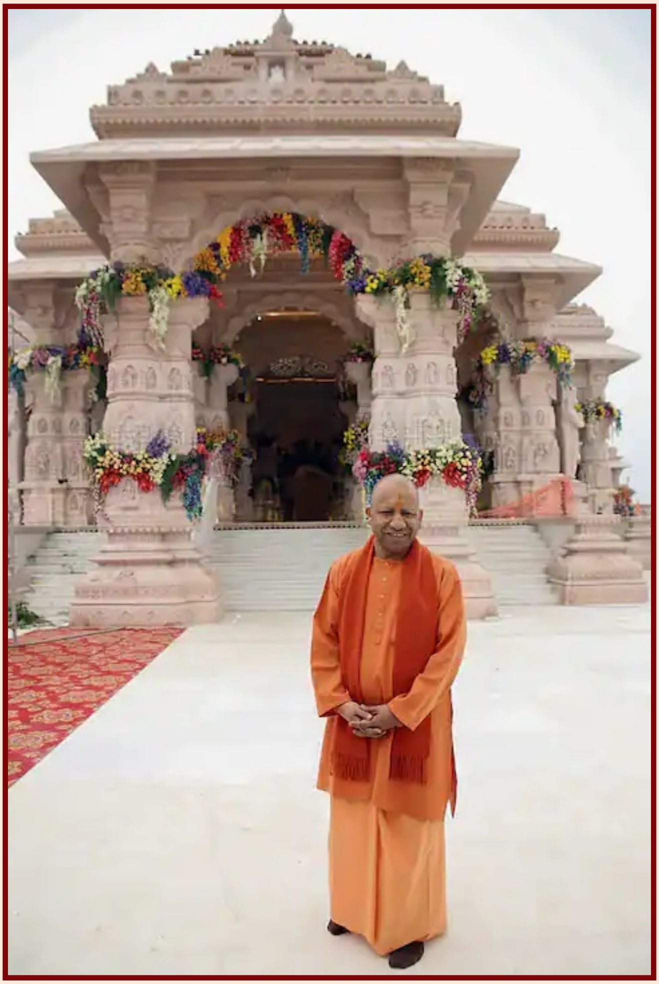

योगी ने रामलला भगवान की जय बोलने के साथ भारत माता की जय और जैजै सीतारम से भाषण की शुरुआत की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, "प्रभु राम लला के भव्य, दिव्य और नव्य धाम में विराजने की आप सभी को कोटि–कोटि बधाई। मन भावुक है।

सीएम योगी ने आगे कहा कि निश्चित रूप से आप सब भी ऐसा महसूस कर रहे होंगे, आज इस ऐतिहासिक अवसर पर भारत का हर नगर, हर ग्राम अयोध्या धाम है। हर मन में राम नाम है। हर आंख हर्ष और संतोष के आंसू से भीगी है। हर जुबान राम नाम जप रही है। रोम–रोम में राम रमे हैं...ऐसा लगता है कि हम त्रेतायुग में आ गए हैं।

भारत का हर मार्ग रामजन्मभूमि की ओर आ रहा है। सीएम योगी ने कहा कि मंदिर वहीं बना है, जहां बनाने का संकल्प लिया था। बहुसंख्यक समाज ने लंबी लड़ाई लड़ी।

'भारत में 'रामराज्य' की स्थापना हो रही।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि 500 वर्षों के सुदीर्घ अंतराल के बाद आए प्रभु श्री रामलला के विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक और अत्यंत पावन अवसर पर आज पूरा भारत भाव–विभोर और भाव विह्वल है। श्री अवधपुरी में श्री रामलला का विराजना भारत में 'रामराज्य' की स्थापना की उद्घोषणा है। 'सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती' की परिकल्पना साकार हो उठी है।

रामकृपा से अब कभी कोई भी श्री अयोध्या धाम की पारंपरिक परिक्रमा को बाधित नहीं कर सकेगा। यहां की गलियों में गोलियां नहीं चलेंगी, सरयू जी रक्त रंजित नहीं होंगी। अयोध्या धाम में कर्फ्यू का कहर नहीं होगा। यहां उत्सव होगा। रामनाम संकीर्तन गुंजायमान होगा।

'प्रभुराम की कृपा से अयोध्या की गलियों में गोलियां नहीं गूंजेंगी'

सीएम योगी ने कहा कि अयोध्या में त्रेतायुग उतर आया है। प्रभुराम की कृपा से अयोध्या की गलियों में गोलियां नहीं गूंजेंगी। कर्फ्यू नहीं लगेगा। यहां दीपोत्सव हुआ करेंगे। जैजै सियाराम बोलकर योगी ने अपना भाषण खत्म किया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हर मन में राम

नाम हैं। हर आंख हर्ष और संतोष के आंसू से भीगा है। हर जिह्वा राम–राम जप रही है। रोम रोम में राम रमे हैं। पूरा राष्ट्र राममय है। ऐसा लगता है हम त्रेतायुग में आ गए हैं। आज रघुनन्दन राघव रामलला, हमारे हृदय के भावों से भरे संकल्प स्वरूप सिंहासन पर विराज रहे हैं। आज हर रामभक्त के हृदय में प्रसन्नता है, गर्व है और संतोष के भाव हैं।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आखिर भारत को इसी दिन की तो प्रतीक्षा थी। भाव–विभोर कर देने वाली इस दिन की प्रतीक्षा में लगभग पांच शताब्दियाँ व्यतीत हो गईं, दर्जनों पीढियां अधूरी कामना लिए इस धराधाम से साकेतधाम में लीन हो गईं, किन्तु प्रतीक्षा और संघर्ष का क्रम सतत जारी रहा।

श्रीरामजन्मभूमि, संभवतः विश्व में पहला ऐसा अनूठा प्रकरण रहा होगा, जिसमें किसी राष्ट्र के बहुसंख्यक समाज ने अपने ही देश में अपने आराध्य के जन्मस्थली पर मंदिर निर्माण के लिए इतने वर्षों तक और इतने स्तरों पर लड़ाई लड़ी हो।

आगे कहा कि सन्यासियों, संतों, पुजारियों, नागाओं, निहंगों, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं, वनवासियों सहित समाज के हर वर्ग ने जाति–पाँति, विचार– दर्शन, उपासना पद्धति से ऊपर उठकर राम काज के लिए स्वयं का उत्सर्ग किया। अंततः आज वह शुभ अवसर आ ही गया कि जब कोटि–कोटि सनातनी आस्थावानों के त्याग और तप को पूर्णता प्राप्त हो रही है। आज संतोष इस बात का भी है कि मंदिर वहीं बना है, जहाँ बनाने का संकल्प लिया था।

संकल्प और साधना की सिद्धि के लिए, हमारी प्रतीक्षा की समाप्ति के लिए, हमारे संकल्प पूर्णता के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का हृदय से आभार और अभिनंदन। अभी गर्भगृह में वैदिक विधि–विधान से रामलला के बाल विग्रह के प्राण–प्रतिष्ठा के हम सभी साक्षी बने। अलौकिक छवि है हमारे प्रभु की। बिल्कुल वैसे, जैसा संत तुलसीदास जी ने वर्णन किया है। धन्य है वह शिल्पी, जिसने हमारे मन में बसे राम की छवि को मूर्त रूप प्रदान किया। विचारों और भावनाओं की विह्वलता के बीच मुझे पूज्य संतों और अपनी गुरु परम्परा का पुण्य स्मरण हो रहा है। आज उनकी आत्मा को असीम संतोष और आनन्द की अनुभूति हो रही होगी, जिन परम्पराओं की पीढ़ियां श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ में अपनी आहुति दे चुकी हैं, उनकी पावन स्मृति को यहां पर कोटि–कोटि नमन करता हूँ।

श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति महायज्ञ न केवल सनातन आस्था व विश्वास की परीक्षा का काल रहा, बल्कि, संपूर्ण भारत को एकात्मकता के सूत्र में बांधने के लिए राष्ट्र की सामूहिक चेतना जागरण के ध्येय में भी सफल सिद्ध हुआ। सदियों के बाद भारत में हो रहे इस चिरप्रतिक्षित नवविहान को देख अयोध्या समेत भारत का वर्तमान आनन्दित हो उठा है।

रामजन्मभूमि आन्दोलन के सेनापति स्व0 अशोक सिंघल

सीएम ने आगे कहा कि भाग्यवान है हमारी पीढ़ी जो इस राम–काज के साक्षी बन रहे हैं और उससे भी बड़भागी हैं वो जिन्होंने सर्वस्व इस राम–काज के लिए समर्पित किया है और करते चले जा रहे हैं। जिस अयोध्या को "अवनि की अमरावती" और "धरती का वैकुंठ" कहा गया, वह सदियों तक अभिशिप्त रही। उपेक्षित रही। सुनियोजित तिरस्कार झेलती रही। अपनी ही भूमि पर सनातन आस्था पददलित होती रही, चोटिल होती रही। किंतु राम का जीवन हमें संयम की शिक्षा देता है और भारतीय समाज ने संयम बनाये रखा। लेकिन हर एक नए दिन के साथ हमारा संकल्प और दृढ़ होता गया। और आज देखिए... पूरी दुनिया अयोध्या जी के वैभव को निहार रही है। हर कोई अयोध्या आने को आतुर है।

‘राष्ट्र प्रतिष्ठा’ को नई ऊंचाई देने का समय : मोदी

सनातन राष्ट्र को नित्यनूतन नया भारत बनाने के लिए प्रयत्नशील प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज बुलन्दशहर में अनेक विकास परियोजनाओं का उद्घाटन करते हुए कहां कि भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा होगयी है अब राष्ट्रकी प्रतिष्ठा में जुट जाना है। मोदी ने सबसे पहले राज्यपाल, सीएम योगी आदित्यनाथ, डिप्टी सीएम बृजेश पाठक, केंद्रीय मंत्री वीके सिंह, बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी व अन्य नेताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने लोगों से कहा कि, आपका ये प्यार और विश्वास जीवन में इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है। मैं आपके प्यार के लिए अभिभूत हूं। यह समय माताओं और महिलाओं के लिए सबसे व्यस्त समय होता है, लेकिन सबकुछ छोड़कर माता और बहनें आशर्वाद देने आईं, इसके लिए प्रणाम। 22 तारीख को अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम के दर्शन हुए और अब यहां जनता के दर्शन का सौभाग्य मिला है। आज पश्चिमी यूपी को विकास के लिए 19 हजार करोड़ से अधिक के प्रोजेक्ट भी मिले हैं। उन्होंने कहा, "साथियों अयोध्या में मैंने रामलला के सानिध्य में कहा था कि प्राण प्रतिष्ठा का काम संपूर्ण हुआ और अब राष्ट्र प्रतिष्ठा को नई ऊंचाई देने का समय है। हमें देव से देश और राम से राष्ट्र के मार्ग को और प्रशस्त करना है। हमारा लक्ष्य 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है और लक्ष्य बड़ा हो तो उसके लिए हर साधन जुटाना होता है। सबको मिलकर प्रयास करना होता है। विकसित भारत का निर्माण भी यूपी के तेज विकास के बिना संभव नहीं है। इसके लिए हमें खेत खलिहान से लेकर ज्ञान, विज्ञान, उद्योग और उद्यम तक, हर शक्ति को जगाना है। आज का ये आयोजन इसी दिशा में एक और कदम है।"

पीएम मोदी ने आगे कहा साथियों, "आजादी के बाद के दशकों में लंबे समय तक भारत में विकास को सिर्फ कुछ ही क्षेत्रों में सीमित रखा गया, देश का एक बहुत बड़ा हिस्सा विकास से वंचित रहा। इसमें भी उत्तर प्रदेश जहां देश की सबसे अधिक आबादी बसती थी, उस पर उतना ध्यान नहीं दिया गया। ये इसलिए हुआ क्योंकि लंबे समय तक यहां सरकार चलाने वालों ने शासकों की तरह बर्ताव किया, जनता को अभाव में रखने का, समाज में बंटवारे का रास्ता उनको सत्ता पाने का सबसे सरल माध्यम लगा, जिसकी कीमत उत्तर प्रदेश की अनेक पीढ़ियों ने भुगती है, लेकिन साथ–साथ देश को भी इसका बहुत बड़ा नुकसान हुआ है. जब देश का सबसे बड़ा राज्य ही कमजोर हो तो देश कैसे ताकतवर हो सकता था।"

उन्होंने कहा कि, आज भारत में दो बड़े डिफेंस कॉरिडोर पर काम चल रहा है, उनमें से एक पश्चिमी यूपी में बन रहा है, आज भारत में नेशनल हाइवे का तेजी से विकास हो रहा है, उसमें से अनेक प्रोजेक्ट पश्चिमी यूपी में बन रहे हैं। आज हम यूपी के हर हिस्से को आधुनिक एक्सप्रेसवे से कनेक्ट कर रहे हैं। भारत का पहला नमो भारत ट्रेन प्रोजेक्ट पश्चिमी यूपी में ही शुरू हुआ है। यूपी के कई शहर मेट्रो सुविधा से जुड़ रहे हैं। यूपी ईस्टर्न और वेस्टर्न डिडेकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का हब बन रहा है। आने वाली शताब्दियों का इसका महत्व रहेगा, जो आपके नसीब में आया है। जब जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनकर तैयार हो जाएगा, तो इस क्षेत्र को नई ताकत और नई उड़ान मिलने वाली है। पीएम ने कहा, साथियों सरकार के प्रयासों से आज पश्चिमी उत्तर प्रदेश रोजगार देने वाले प्रमुख सेंटरों में से एक बन रहा है। केंद्र सरकार देश में चार नए औद्योगिक स्मार्ट शहर बनाने की तैयारी में है। ऐसे नए शहर जो दुनिया के श्रेष्ट मैन्युफैक्चरिंग और निवेश स्थलों को टक्कर दे सके। इसमें से एक औद्योगिक स्मार्ट शहर पश्चिमी यूपी के ग्रेटर नोएडा में बना है। आज मुझे इस महत्वपूर्ण टाउनशिप का उद्घाटन करने का सौभाग्य मिला है। यहां हर वो बुनियादी सुविधाएं विकसित की गईं हैं, जो रोजमर्रा के जीनव में कारोबार के लिए चाहिए। अब ये शहर दुनियाभर के निवेशकों के लिए तैयार है। इसका लाभ यूपी के खासकर पश्चिमी यूपी के हर छोटे, लघु और कुटीर उद्योग को भी होगा। इसके बहुत बड़े लाभार्थी किसान परिवार और खेत मजदूर भी होंगे। यहां कृषि आधारित उद्योगों के लिए नई संभावनाएं बनेंगी।

मोदी ने कहा कि, "हमारा प्रयास है कि कोई भी लाभार्थी सरकार

की योजना से वंचित न रहे. इसके लिए मोदी की गारंटी वाली गाड़ी गांव–गांव आ रही है। यूपी में भी लाखों लोग इस गारंटी वाली गाड़ी से जुड़े हैं। भाइयों और बहनों, मोदी की गारंटी है कि जल्द से जल्द देश के हर नागरिक को उसके लिए बनी सरकारी योजना का लाभ मिले। आज देश मोदी की गारंटी को गारंटी पूरा होने की गारंटी मानता है। क्योंकि हमारी सरकार जो कहती है वो करके दिखाती है। आज हमारा पूरा प्रयास है कि सरकार की योजना का लाभ हर लाभार्थी तक पहुंचे. इसलिए मोदी शत प्रतिशत की गारंटी दे रहा है। जब सरकार शत प्रतिशत लाभार्थियों तक पहुंचती है तो किसी के साथ भेदभाव की गुंजाइश नहीं रह जाती, जब ऐसा होता है तो किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार की गुंजाइश नहीं रहती। यही सच्चा सेक्युलरिज्म है, यही सच्चा सामाजिक न्याय है। गरीब किसी भी समाज में हो, उसकी जरूरतें उसकी सपने समान है, किसान किसी भी समाज का हो, उसकी जरूरतें और उसके सपने एक जैसे हैं. महिलाएं किसी भी समाज की हो, उनकी जरूरतें और सपने एक जैसे हैं, युवा भी किसी भई समाज के हों, उनकी चुनौतियां और सपने भी एक जैसे हैं। इसलिए मोदी हर जरूरतमंद तक तेजी से पहुंचना चाहता है।"

उन्होंने आगे कहा, "आजादी के बाद लंबे समय तक कोई गरीबी हटाओ का नारा देता रहा, तो कोई सामाजिक न्याय के नाम पर झूठ बोलता रहा, लेकिन देश के गरीबों ने देखा कि सिर्फ कुछ परिवारों के घर अमीरी आई, कुछ ही परिवारों की राजनीति फली–फूली। आम लोग दंगों से सहमा हुआ था। अब सब बदल रहा है, मोदी पूरी ईमानदारी से आपकी सेवा में जुटा हुआ है। हमारी सरकार में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं, जो बचे हैं उन्हें उम्मीद जगी है कि वे भी जल्द गरीबी को समाप्त कर देंगे। मेरे लिए तो आप ही मेरा परिवार हैं। आपका सपना ही मेरा संकल्प है। इसलिए आप जैसे देश के सामान्य परिवार जब सशक्त होंगे, यही मोदी की पूंजी होगी। गांव, गरीब, युवा, महिला और किसान हो सबको सशक्त करने का यह अभियान जारी रहेगा।"

मोदी ने विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा, "मैं बुलंदशहर समेत वेस्टर्न यूपी के सभी परिवारजनों को बहुत–बहुत बधाई देता हू। भाइयों और बहनों इस क्षेत्र ने तो देश को कल्याण सिंह जैसा सपूत दिया है, जिन्होंने राम काज और राष्ट्र काज दोनों के लिए अपना जीवन समर्पित किया. आज वो जहां हैं, अयोध्या धाम को देखकर बहुत आनंदित हो रहे होंगे। ये हमारा सौभाग्य है कि देश ने कल्याण सिंह जैसे और उनके जैसे अनेक लोगों का सपना पूरा किया है, लेकिन अभी भी सशक्त राष्ट्र निर्माण का, सच्चे सामाजिक न्याय का उनका स्वप्न पूरा करने के लिए हमें अपनी गति बढ़ानी है। इसके लिए हमें मिलकर काम करना है"।

उद्घाटित प्रोजेक्ट

बुलंदशहर में कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डीएफसी) पर न्यू खुर्जा–न्यू रेवाड़ी के बीच 173 किलोमीटर लंबी डबल लाइन, मथुरा–पलवल सेक्शन और चिपियाना बुजुर्ग–दादरी सेक्शन को जोड़ने वाली चौथी लाइन, अलीगढ़ से भदवास चार लेन वाला वर्क पैकेज–1 (एनएच–34 के अलीगढ–कानपुर खंड का हिस्सा), एनएच–709ए की चौड़ाई बढ़ाने, एनएच–709एडी पैकेज–प्प के शामली–मुजफ्फरनगर सेक्शन को चार लेन करने व अन्य रोड प्रोजेक्ट का उद्घाटन किया.

प्रधानमंत्री इस दौरान इंडियन ऑयल की टूंडला–गवारिया पाइपलाइन का भी उद्घाटन किया. करीब 700 करोड़ रुपये की लागत से बना यह 255 किलोमीटर लंबा पाइपलाइन प्रोजेक्ट तय समय से काफी पहले पूरा हो गया है. पीएम ग्रेटर नोएडा में 747 एकड़ में फैले इंटीग्रेटिड इंडस्ट्रियल टाउनशिप प्रोजेक्ट का भी उद्घाटन किया. 1,714 करोड़ रुपये की लागत वाला यह प्रोजेक्ट दक्षिण में ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे और पूर्व में दिल्ली–हावड़ा ब्रॉड गेज रेलवे लाइन के साथ लगा है. इसके अलावा पीएम करीब 460 करोड़ रुपये की लागत से बने सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी), मथुरा सीवरेज योजना, मुरादाबाद (रामगंगा) सीवरेज प्रणाली और एसटीपी कार्यों का भी उद्घाटन किया.

श्रीराम विश्व प्रतिष्ठ महानायक

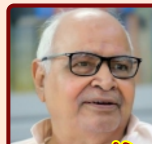

हृदयनारायण दीक्षित

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अयोध्या सारी दुनिया में चर्चा का विषय हैं। मोदी जी विश्व राजनीति के सम्मानित चेहरे हैं। वे भारत के लोगों के मन के महानायक हैं। प्रधानमंत्री आध्यात्मिक अनुष्ठान पर हैं। सारा देश उनकी ओर टकटकी लगाए देख रहा है। उधर अयोध्या में दिक्काल का अतिक्रमण हो रहा है। मोदी जी चमत्कृत करते हैं। विश्व इतिहास में उनके जैसा लोकप्रिय कोई राजप्रमुख नहीं दिखाई पड़ता। दुनिया के किसी भी राजप्रमुख के नाम की ऐसी चर्चा कभी नहीं हुई जैसी मोदी की हो रही है। अयोध्या में दिव्य और भव्य श्रीराम जन्मभूमि मंदिर सारी दुनिया के हिन्दुओं का सपना रहा है। मोदी इस सपने से अयोध्या आन्दोलन के समय से जुड़े हुए हैं। उनके राजनैतिक विरोधी भी हतप्रभ हैं। मोदी भारत के सांस्कृतिक इतिहास के महानायक हैं। नया इतिहास बन रहा है। अयोध्या ने इतिहास के अनेक प्रिय व अप्रिय प्रसंगों को देखा है। सरयू भूमि इसकी साक्षी है। अयोध्या ने वैदिक काल से लेकर अब तक इतिहास बनते देखा है। अयोध्या सभी घटनाओं की दृष्टा है और दृष्टि भी है। यही अयोध्या विश्व आकर्षण हैं। वह तथ्य हैं और कथ्य भी हैं। राम लम्बे समय तक चित्रकूट में रहे। चित्रकूट भी प्रत्यक्ष है और दण्डकारण्य भी। सरयू, मन्दाकिनी और गंगा ने श्रीराम को निकट से देखा है।

अयोध्या का नया इतिहास नृत्य मगन है। सब तरफ अयोध्या ही अयोध्या की चर्चा है। जो अयोध्या से बहुत दूर दक्षिण या उत्तर में बैठे हैं उनके अंतर्मन में भी अयोध्या है। अयोध्या सामने है। यही दाएं है। यही बाएं है। अयोध्या सम्प्रति मनमोहनी हो गई है। भारत के अंतस का छंदस बन गई है। वे वैदिक मंत्रों की ऋचा जैसी हैं। ऋचाएं परम व्योम से धरती पर उतरती हैं। ऋग्वेद के ऋषि ने बताया है कि ऋचाएं परम व्योम में रहती हैं और धरती पर जाग्रत बोध वाले मनुष्यों के हृदय में उतरती हैं। अयोध्या भारत के मन का नया उत्सव और उल्लास बन गई है। अयोध्या दिव्य हैं। भव्य हैं। महाकवि तुलसीदास ने 500 वर्ष पहले अयोध्या के गीत गाए थे, ''अवधपुरी अति रुचिर बनाई। देवन्ह सुमन वृष्टि झरि लाई।'' अयोध्या को निकट से देखने के लिए आकाश और नक्षत्र भी धरती पर उतर आए हैं। आकाश का शब्द गुण अयोध्या में उतर आया है। तुलसीदास श्रीराम के राज्यारोहण की चर्चा करते हैं, ''राम राज्य बैठे त्रैलोका। हर्षित भए मिटे सब शोका।'' तुलसी कहते हैं, ''नभ दुंदुभीं बाजहिं बिपुल गंधर्ब किंनर गावहीं। नाचहिं अपछरा बृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं।'' सम्प्रति अयोध्या सबको खींच रही है। काव्य, गीत संगीत बन गई है अयोध्या।

अयोध्या हजारों वर्ष प्राचीन वैदिक काल में भी प्रतिष्ठित नगरी रही है। ऋग्वेद में वैदिक काल के राजा इक्ष्वाकु का उल्लेख है। उन्होंने अयोध्या में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। पौराणिक अनुश्रुति के अनुसार इनकी 19वीं पीढ़ी के बाद मानधाता राजा हुए। उन्होंने अनेक राज्य जीते। मानधाता के बाद उनके पुत्र पुरुकुत्स अयोध्या के राजा हुआ। उसके 2 पीढ़ी बाद त्रसदस्यु राजा हुए। पुरुकुत्स के 11 पीढ़ी बाद राजा हरिश्चन्द्र अयोध्या के राजा बने। इक्ष्वाकु वंश की 31वीं पीढ़ी में राजा सगर और 45वीं में भागीरथ। फिर अम्बरीश। 60वीं पीढ़ी में दिलीप। दिलीप का पौत्र रघु। कालिदास ने रघुवंश में इनकी चर्चा की। फिर रघु के पुत्र अज। अज के पुत्र दशरथ। श्रीराम इक्ष्वाकु वंश की 65वीं

पीढ़ी में हुए थे। श्रीराम विश्व प्रतिष्ठ महानायक हुए।
यूनान के कवि होमर प्रतिष्ठित कवि गिने जाते हैं। उनकी रचनाएं खूब पढ़ी जाती हैं। वे अपने समय की सभ्यता और संस्कृति के प्रतिनिधि कहे जाते हैं। उन्होंने इलियड और ओडिसी नाम के दो महाकाव्यों की रचना की थी। उनका कार्यकाल ईसा से 1000 वर्ष पूर्व था। यूनानी इतिहास का एक कालखण्ड होमर युग कहा जाता है। जैसे रामायण में श्रीराम के पात्र से हिन्दू प्रेरणा लेते हैं वैसे ही ओडिसी के वीर एकलिस की गाथा से यूनानी प्रसन्न होते हैं। लेकिन श्रीराम 'अखिल लोकदायक विश्रामा' हुए। वे इतिहास के अंक में नहीं समाए। इतिहास का पात्र छोटा पड़ गया और श्रीराम विराट पुरुष।
अयोध्या और श्रीराम इतिहास के साथ संस्कृति और दर्शन के भी प्रतीक हैं। भारत के प्राचीन इतिहास में अनेक प्रतिष्ठित राजा हुए हैं। लेकिन राजा रामचन्द्र की बात ही दूसरी है। वे भारत की मर्यादा हैं। उनका राज्य विश्व इतिहास में उल्लेखनीय है। दुनिया में अनेक राज्य व्यवस्थाओं के मॉडल हैं। लेकिन रामराज्य की बात ही दूसरी है। तुलसी वाल्मीकि के सृजन में रामराज्य शोकरहित है। आकाश में आए मेघ उतना ही पानी बरसाते हैं जितना आवश्यक होता है–मांगे वारिधि देहिं जल रामचन्द्र के राज। रामराज्य में परस्पर शत्रुता नहीं है। समाज में विषमता भी नहीं है। तुलसीदास लिखते हैं, ''बयरु न कर काहू संग कोई। राम प्रताप विषमता खोई।'' रामराज्य में सब प्रसन्न हैं। सब सुखी हैं। गाँधी जी रामराज्य पर मोहित थे। कुछ विद्वान राम को कल्पना बताते रहे हैं। अब वे निराश और हताश हैं। राम इतिहास, शास्त्र, पुराण और लोकश्रुति अनुश्रुति के भी महानायक हैं। इंडोनेशिया, बाली, जावा, लाओस, कम्बोडिया, इंग्लैंड और अमेरिका तक रामकथा की धूम रहती है। मार्क्सवादी चिन्तक डॉ० रामविलास शर्मा ने लिखा है, **''दण्डक वन और रामायण में राम के साथ लक्ष्मण और सीता का समय इसी वन में बीता है। दण्डक वन की ऐतिहासिक वास्तविकता सही है।''** श्रीराम इसी ऐतिहासिक क्षेत्र के इतिहास पुरुष हैं। डॉ० शर्मा ने लिखा है, ''यूरोप या एशिया में किसी महाकाव्य का नायक ऐसा लोकप्रिय नहीं हुआ जैसा रामायण के राम हैं। उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसी विशेषता है, जो केवल भारतीय जनता को नहीं वरन मानव मात्र की भावनाएं व्यक्त करती है। परिवार में वह नई तरह के सम्बंध कायम करते दिखाई पड़ते हैं। सुख दुख में समान रूप से भागीदार। महाभारत की तरह रामायण इतिहास भी है। इसके नायक भी इतिहास के पात्र हैं।'' डॉ० शर्मा ने मार्क्सवादी होकर भी श्रीराम को इतिहास का पात्र बताया है।
वामपंथी विद्वान श्रीराम को ऐतिहासिक पात्र नहीं मानते। उनका ज्ञान और इतिहासबोध दयनीय है। श्रीराम के प्रति लोकजीवन की श्रद्धा है और आस्था भी। आस्था की भावना शून्य से नहीं पैदा होती। आस्था का विकास किसी राजाज्ञा से नहीं होता। यह साल–सौ पचास साल में नहीं बनती। आस्था लोक और इतिहास से सामग्री लेती है। जीवन मूल्यों से संगति बैठाती है। वैज्ञानिक विवेक पर कसती है। संस्कृति, दर्शन और लोकमंगल के तत्वों से जांचती है। यूरोपीय इतिहास में राजाओं की विवरणी होती है। भारतीय इतिहास दृष्टि इससे भिन्न है। यहाँ लोकमंगल वरेण्य है। इतिहास की भारतीय दृष्टि में–राम इतिहास ही हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम होने के कारण आस्था का विषय भी हैं। सम्प्रति एक नई तरह का नवजागरण हो रहा है। राष्ट्रीय स्वाभिमान सातवें आसमान पर है। 22 जनवरी की अधीर प्रतीक्षा है। पूरब के क्षितिज अरुण तरुण हो रहे हैं। ग्रह नक्षत्र सुमंगल योग बना रहे हैं। दिव्य शक्तियां अयोध्या के आकाश पर नृत्य कर रही हैं। दर्शन की प्यास बढ़ रही है। तुलसीदास ने बताया है कि राम राज्यारोहण के अवसर पर चारों वेद मनुष्य रूप में आए थे। 22 जनवरी के महोत्सव के लिए वेद, उपनिषद भी आ गए होंगे। वाल्मीकि, विश्वामित्र व वशिष्ठ तो आएँगे ही। भारत का लोक ऐसे सभी आगंतुकों के स्वागत की प्रतीक्षा में है। ऐसे सभी पूर्वजों अग्रजों को प्रणाम। हम सब ऋग्वेद का मंत्र, **''इदं नमः पूर्वेभ्यः पूर्वजेभ्यः ऋषिभ्यः–पूर्वजों को नमस्कार, ऋषियों को नमस्कार, मार्गदृष्टाओं को नमस्कार।''** दोहराते हैं।

पुरुषोत्तम श्री राम का लोकजीवन

डॉ. सौरभ मालवीय

सनातन धर्म के अनुयायी श्रीराम को भगवान मानते हैं तथा उनकी पूजा–अर्चना करते हैं। वह भगवान विष्णु के अवतार माने जाते हैं, जिन्होंने लंका नरेश रावण एवं अन्य राक्षसों का संहार करके मानव जाति को उनके अत्याचारों से मुक्त करवाने के लिए अयोध्या के राजा दशरथ के यहां राम के रूप में जन्म लिया था।

इसके इतर राम ने स्वयं को एक जननायक के रूप में स्थापित किया। उनका संपूर्ण जीवन इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मर्यादा के नूतन आयाम स्थापित किए। इसीलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन में कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया, इसलिए भी उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है।

आदर्श पुत्र

श्रीराम एक आदर्श पुत्र थे। उन्होंने अपने पिता राजा दशरथ के वचन का पालन किया। उन्होंने राजा दशरथ द्वारा अपनी पत्नी कैकेयी को दिए वचन को पूर्ण करने के लिए राजपाट त्याग कर चौदह वर्ष का वनवास सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपनी माता के वचन का सहृदय से पालन करके यह सिद्ध कर दिया कि उनके लिए पिता के वचन और माता की प्रसन्नता से बढ़कर कुछ भी नहीं है। उन्होंने वैभवशाली जीवन का त्याग करके वन में जीवनव्यतीत करना उचित समझा। उन्होंने अपने पिता की मनोव्यथा एवं उनकी विवशता को अनुभव किया तथा बिना किसी अंतर्द्वन्द्व के वनवास जाने का निर्णय ले लिया। यह निर्णय कोई सरल कार्य नहीं था। आज के युग में कोई अपनी एक इंच भूमि भी अपने भाई को नहीं देना चाहता। भूमि और संपत्ति को लेकर भाइयों के मध्य रक्तपात हो जाता है। ऐसे में त्रेता युग में जन्मे श्रीराम परिवार मूल्य बोध के लिए एक आदर्श स्थापित करते हैं।

चित्रकूट में जब भरत व उनके अन्य परिवारजन उन्हें पुनः अयोध्या वापस लौटने को कहते हैं, वह इसे अस्वीकार कर देते हैं। उनकी माता कैकेयी भी उनसे अपने वचनों को वापस लेने की बात कहती हैं, परन्तु वह अपने निर्णय पर अटल रहते हैं तथा उनके कथन को अस्वीकार कर देते हैं। वह अपनी माता से कहते हैं कि आपका वचन पिता से संबंधित था, मुझसे नहीं। मेरा संबंध तो पिता के वचन से है आपसे नहीं, इसलिए मैं उनके वचन की अवज्ञा नहीं कर सकता। मैं अपने पिता के वचन से बंधा हुआ हूं। तभी से यह कहा जा रहा है कि "रघुकुलरीत सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाय।"

वास्तव में राजा दशरथ अपने पुत्र से अत्यधिक स्नेह करते थे। पुत्र के वियोग में उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए, परन्तु अपने वचन का पालन किया।

आदर्श भाई

श्रीराम एक आदर्श भाई भी थे। उनके लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के प्रति अथाह प्रेम, त्याग एवं समर्पण के कारण उन्हें आदर्श भाई माना जाता है। उन्होंने अपनी माता कैकेयी के आदेश पर अपना राज्य अपने छोटे भाई भरत को सौंप दिया और स्वयं अपनी पत्नी सीता और छोटे भाई लक्ष्मण के साथ वनवास के लिए प्रस्थान कर गए।

रामचरित मानस में भक्त शिरोमणि तुलसीदास कहते हैं–

सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत।।

अर्थात वन के लिए आवश्यक वस्तुओं को साथ लेकर श्रीराम पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण सहित ब्राह्मण एवं गुरु के चरणों की वंदना करके सबको अचेत करके चले गए।

सद्भाव का संदेश

श्रीराम ने समाज के प्रत्येक वर्ग को आपस में जोड़कर रखने का संदेश दिया। उन्होंने प्रेम एवं भाईचारे का संदेश दिया। निषादों के राजा निषादराज श्रीराम के अभिन्न मित्र थे। वह ऋृंगवेरपुर के राजा थे। उनका नाम गुह्यराज था। वह श्रीराम के बाल सखा थे। उन्होंने एक ही गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। आदिवासी समाज के लोग आज भी निषादराज की पूजा करते हैं। उन्होंने वनवास काल में श्रीराम, सीता एवं लक्ष्मण को गंगा नदी पार करवाई थी।

संपूर्ण प्राणियों से प्रेम

श्रीराम मनुष्यों से ही नहीं, अपितु पशु–पक्षियों से भी हृदय से प्रेम करते थे। पशु–पक्षियों ने भी समय–समय पर उनकी सहायता की। इनकी सहायता से ही उन्हें सीता के हरण के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। श्रीराम का गिलहरी से संबंधित एक अत्यंत रोचक प्रसंग है।

जिस समय श्रीराम की सेना रामसेतु के निर्माण के कार्य में व्यस्त थी, उस समय लक्ष्मण ने उन्हें गिलहरी को निहारते हुए देखा। इस बारे में पूछने पर श्रीराम ने बताया कि एक गिलहरी बार–बार समुद्र के तट पर जाती है तथा रेत पर लोटपोट करके रेत को अपने शरीर पर चिपका लेती। जब रेत उसके शरीर पर चिपक जाती, तो वह सेतु पर जाकर सारा रेत झाड़ देती है। वह बहुत समय से ऐसा कर रही है। यह सुनकर लक्ष्मण ने कहा कि

वह केवल क्रीड़ा का आनंद ले रही है। इस पर श्रीराम ने कहा कि लक्ष्मण से कहा कि मुझे ऐसा प्रतीत नहीं होता। उत्तम तो यही होगा कि हम इस संबंध में गिलहरी से ही पूछ लेते हैं। उन्होंने गिलहरी से पूछा कि तुम क्या कर रही हो? गिलहरी ने उत्तर दिया कि कुछ नहीं, केवल सेतु निर्माण के पुनीत कार्य में अपना थोड़ा सा योगदान दे रही हूं। उन्हें उत्तर देकर गिलहरी पुनः अपने कार्य के लिए चल पड़ी, तो लक्ष्मण ने उसे रोकते हुए पूछा कि तुम्हारे रेत के कुछ कणों से क्या होगा? इस पर गिलहरी ने उत्तर दिया कि आप सत्य कह रहे हैं। मेरे रेत के कुछ कणों से कुछ नहीं होगा, परन्तु मैं अपने सामर्थ्य के अनुसार जो योगदान दे सकती हूं, दे रही हूं। मेरे कार्य का कोई मूल्यांकन नहीं, परन्तु इससे मेरे मन को संतुष्टि प्राप्त हो रही है कि मैं अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार अपना योगदान दे रही हूं। मेरे लिए यही पर्याप्त है, क्योंकि यह राष्ट्र का कार्य है एवं धर्म का कार्य है।

गिलहरी का यह प्रसंग सदैव से ही प्रासंगिक रहा है, क्योंकि इससे यह प्रेरणा मिलती है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने सामर्थ्य के अनुसार जनहित एवं राष्ट्र हित में कार्य करना चाहिए।

नेतृत्व क्षमता

श्रीराम एक लोक नायक थे। उनमें नेतृत्व की अपार क्षमता थी। उन्होंने समुद्र में पत्थरों से सेतु का निर्माण करवाया, जिसे राम सेतु कहा जाता है। सीताहरण के पश्चात उन्होंने वानरों की सेना के माध्यम से लंका पर चढ़ाई कर दी। एक ओर लंका नरेश रावण की बलशाली राक्षसों की शक्तिशाली सेना थी, तो दूसरी ओर निर्बल वानरों की छोटी सी सेना। किन्तु श्रीराम के पास सत्य की शक्ति थी और वानर सेना का उनके प्रति अटूट प्रेम, श्रद्धा एवं विश्वास था। इस सत्य एवं श्रद्धा के बल पर उन्होंने लंका पर विजय प्राप्त की। वे अपने मित्रों एवं साथियों को आदर एवं सम्मान देते थे। उन्होंने अपने मित्र निषादराज, सुग्रीव, हनुमान, केवट, जामवंत एवं विभीषण आदि को समय–समय पर नेतृत्व करने के अवसर प्रदान किए तथा उनकी हृदय से सराहना भी की।

मातृभूमि से प्रेम

लंका पर विजय प्राप्त करने के पश्चात श्रीराम ने लंका का राज्य रावण के भाई विभीषण को सौंप दिया तथा अयोध्या लौटने का निर्णय किया। इस पर लक्ष्मण ने कहा कि लंका में स्वर्गीय सुख है। लंका स्वर्णमयी है। अयोध्या में क्या रखा है? इस पर श्रीराम ने कहा–

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।। (वाल्मीकि रामायण)

अर्थात यद्यपि यह लंका स्वर्ण से निर्मित है, फिर भी इसमें मेरी कोई रुचि नहीं है, जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है।

श्रीराम ने स्वयं को एक लोकनायक के रूप में ही प्रस्तुत किया। इसलिए वह कभी स्वाभाविक जीवन व्यतीत नहीं कर पाए। उनका बाल्यकाल शिक्षा ग्रहण करते हुए गुरुकुल में व्यतीत हुआ। गुरुकुल में वह राजकुमारों की भांति नहीं रहे, अपितु उन्हें अन्य बालकों की भांति ही अपने सारे कार्य स्वयं करने पड़ते थे। इसके अतिरिक्त में वह अपने सहपाठियों के साथ कंद–मूल एवं लकड़ियां एकत्रित करने वन भी जाते थे। इस प्रकार उनका बाल्यकाल सुख–समृद्धि में व्यतीत नहीं हुआ। युवा होने पर जब उन्हें राज्य का संपूर्ण दायित्व सौंपने का निर्णय लिया गया एवं उनके राज्यभिषेक की तैयारियां होने लगीं, तो उन्हें अकस्मात चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा। उन्होंने वनवास की समयावधि में भी अनेक कष्टों का सामना किया। जब रावण ने उनकी पत्नी सीता का हरण कर लिया, तो उन्हें पत्नी के वियोग में एवं उनकी खोज में वन–वन भटकना पड़ा। एक साहसी शत्रु से सामना करने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं था। उन्हें वानर राज सुग्रीव की सहायता प्राप्त हुई, परन्तु इससे पूर्व उन्हें बाली का वध करके सुग्रीव को राजा बनाना पड़ा। इस समयावधि में उन्हें अनेक कष्ट एवं आरोपों का सामना करना पड़ा।

एक राजा के रूप में भी श्रीराम ने स्वयं को लोकनायक ही सिद्ध किया। उन्होंने लोकनायक के रूप में शासन किया। वह राजा थे। वह चाहते तो निरंकुश होकर निर्णय ले सकते थे, परन्तु उन्होंने लोकनायक के रूप में आदर्श स्थापित किया। उनके राज्य में सबको अभिव्यक्ति का अधिकार था। जब धोबी ने माता सीता के चरित्र पर प्रश्न चिन्ह लगाया, तो श्रीराम ने सीता का त्याग कर दिया। महाकवि भवभूति उत्तररामचरित में कहते हैं–

एक राजा के रूप में भी श्रीराम ने स्वयं को लोकनायक ही सिद्ध किया। उन्होंने लोकनायक के रूप में शासन किया। वह राजा थे। वह चाहते तो निरंकुश होकर निर्णय ले सकते थे, परन्तु उन्होंने लोकनायक के रूप में आदर्श स्थापित किया।

स्नेहं दयां च सौख्यं च, यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो, नास्ति में व्यथा।।

अर्थात देश व समाज की सेवा के लिए स्नेह, दया, मित्रता यहां तक कि धर्मपत्नी को छोड़ने में भी मुझे कोई पीड़ा नहीं होगी।

माता सीता एक बार पुनः वनवास के लिए चली गईं। इसके पश्चात श्रीराम ने भी राजसी जीवन का त्याग कर दिया। वह एक वनवासी की भांति जीवन व्यतीत करने लगे। वह भूमि पर चटाई बिछाकर सोते तथा कंद–मूल खाते। वह अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करते थे, इसलिए उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। उस समय राजा अनेक विवाह करते थे, परन्तु श्रीराम पत्नीव्रता रहे। श्रीराम ने एक पुत्र के रूप में, भाई के रूप में, पति के रूप में, मित्र के रूप में तथा राजा के रूप में समाज के लिए आदर्श स्थापित किया। उन्होंने प्रेम, भाईचारे, त्याग एवं समर्पण का संदेश दिया। वर्तमान युग में जब स्वार्थ बढ़ गया है तथा संबंध स्वार्थ सिद्धि तक ही सीमित होकर रह गए हैं, ऐसे में लोकनायक राम एक आदर्श बनकर सामने आते हैं।

लेखक – लखनऊ विश्वविद्यालय में एसोसीएट प्रोफेसर है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अयोध्या धाम की प्रतिष्ठा

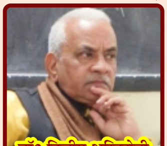

डॉ0 दिलीप अग्निहोत्री

प्रयाग राज कुम्भ, प्रवासी भारतीय सम्मेलन, अनेक इनवेस्टर्स समिट के आयोजन में योगी आदित्यनाथ की प्रबंधन कुशलता विश्व स्तर पर प्रसिद्ध रही है। विगत साढ़े छह वर्षों के दौरान अनेक वैश्वीक कीर्तिमान यूपी के खाते में आए हैं। अयोध्या का दीपोत्सव भी इसमे शामिल रहा है।

एक बार फिर श्री राजमंदिर प्राण प्रतिष्ठा की चर्चा विश्व स्तर पर हुई है। इसकी भव्यता ने योगी की प्रबंधन कुशलता को एक बार फिर प्रमाणित किया है।

'मोरे जियँ भरोस दृढ़ सोई। मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई।।'

अयोध्या में मन्दिर निर्माण प्राण प्रतिष्ठा एतिहासिक अवसर था। इसके साथ ही विगत छह वर्षों में यहां हुए विकास की झलक भी अतिथियों और दुनिया ने देखी। यह धर्म नगरी 'विश्व की सांस्कृतिक राजधानी' के रूप में प्रतिष्ठित हो रही है। सांस्कृतिक अयोध्या, आयुष्मान अयोध्या, स्वच्छ अयोध्या, सक्षम अयोध्या, सुरम्य अयोध्या, सुगम्य अयोध्या, दिव्य अयोध्या और भव्य अयोध्या' के रूप में पुनरोद्धार के लिए हजारों करोड़ रुपये यहां पर भौतिक विकास के लिए लग रहे हैं।

आज यहां राम जी की पैड़ी, नया घाट, गुप्तार घाट, ब्रह्मकुंड, भरत कुंड, सूरज कुंड सहित विभिन्न कुंडों के कायाकल्प, संरक्षण, संचालन और रख–रखाव के कार्य हो रहे हैं। रामायण परम्परा की कल्चरल मैपिंग कराई जा रही है। राम वन गमन पथ पर रामायण वीथिकाओं का निर्माण हो रहा है। इस नई अयोध्या में पुरातन संस्कृति और सभ्यता का संरक्षण तो हो ही रहा है, भविष्य की जरूरतों को देखते हुए आधुनिक पैमाने के अनुसार सभी नगरीय सुविधाएं भी विकसित हो रहीं हैं। आज यहां राम जी की पैड़ी, नया घाट, गुप्तार घाट, ब्रह्मकुंड, भरत कुंड, सूरज कुंड सहित विभिन्न कुंडों के कायाकल्प, संरक्षण, संचालन और रख–रखाव के कार्य हो रहे हैं। रामायण परम्परा की 'कल्चरल मैपिंग' कराई जा रही है। राम वन गमन पथ पर रामायण वीथिकाओं का निर्माण हो रहा है। इस नई अयोध्या में पुरातन संस्कृति और सभ्यता का संरक्षण तो हो ही रहा है, भविष्य की जरूरतों को देखते हुए आधुनिक पैमाने के अनुसार सभी नगरीय सुविधाएं भी विकसित हो रहीं हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि निश्चिंत रहिये, प्रभु राम कृपा से अब कोई अयोध्या की परिक्रमा में बाधा नहीं बन पाएगा। अयोध्या की गलियों में अब गोलियां नहीं चलेगी, कर्फ्यू नहीं लगेगा। अपितु दीपोत्सवां, रामोत्सव और श्रीराम नाम संकीर्तन से यहां की गलियां गुंजायमान होंगी।

पिछले कई दिनों से देश में राम आयेंगे आयेंगे राम आयेंगे की गूंज थी. अब लय स्वर और भाव सब बदल गए। अयोध्या जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई..राम आए हैं आए हैं राम आए हैं।

इसी के साथ पांच सौ वर्षों का सनातन अनुयायियों का सपना साकार हुआ.इसके साथ ही इस सम्बन्ध में चल रहे नकरात्मक विचार भी निरर्थक हुए। दो शंकराचार्य और इंडी गठबंधन के नेताओं के विचार रंचमात्र भी बाधक नहीं बने। विपक्षी नेताओं का व्यवहार उनके अतीत के अनुरूप था। सत्ता मे रहते हुए उन्होंने प्रभु श्री राम को काल्पनिक बताया। किसी ने निहत्थे कार सेवकों पर गोलियां चलवाई। कोई सनातन के उन्मूलन का प्रलाप कर रहा है। कोई हिन्दू धर्म को धोखा बता रहा है। श्री राम चरित मानस पर हमला बोल रहा है। कोई इस मन्दिर की जगह अस्पताल और स्कुल बनाने का रोना लेकर बैठा है। ऐसे विपक्ष से श्री राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा आमन्त्रण को अस्वीकार करने की ही उम्मीद थी। जिस वोटबैंक समीकरण पर उनका राजनीतिक अस्तित्व कायम हुआ, वह आज भी उसी मुकाम पर हैं। इन नेताओं का दुस्साहस केवल सनातन तक सीमित रहता है। अन्य किसी मजहब पर टिप्पणी की इनकी औकात नहीं है। वैसे ऐसे नेताओं के बयानों को जनमानस ने ही खारिज कर दिया है। उन्हें जाति मजहब तक ही सीमित रहना है. लेकिन

दो शंकराचार्य को इन नेताओं का समर्थन मिलना अवश्य दिलचस्प रहा. क्योंकि श्री राजमंदिर आंदोलन के दौरान अयोध्या में भी शंकराचार्य को बेरहमी से उत्पीड़ित किया गया था. एक शंकराचार्य को झूठे आरोप में तमिलनाडु की सरकार ने जेल में रखा था।

वैसे भिन्नता सनातन धर्म में ही सम्भवत है. यही कारण है प्राण प्रतिष्ठा पर प्रश्न उठाने वाले शंकराचार्य को शास्त्रार्थ की चुनौती दी गई। यह भी सनातन में ही सम्भव है। गीर्वाणवाग्वर्धिनी सभा ने कहा था कि बाइस जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा में कोई दोष नहीं है। प्राण प्रतिष्ठा पूरी तरह दोष रहित है। इस दिन का मुहूर्त सर्वोत्तम है। इसके बाद अगले दो वर्ष तक प्राण प्रतिष्ठा और लोकार्पण का शुभ मुहूर्त नहीं मिल रहा था।

इसमें लग्नस्थ गुरु की दृष्टि पंचम, सप्तम एवं नवम भाव पर होने से मुहूर्त उत्तम है। मकर का सूर्य होने के कारण पौषमास का दोष समाप्त हो जाता है। शिलान्यास व लोकार्पण का मुहूर्त देने वाले पं. गणेश्वर शास्त्री द्राविड़ इस सभा के परीक्षाधिकारी मंत्री भी हैं। उनका कहना था कि देवमंदिर की प्रतिष्ठा दो तरह से होती है। एक संपूर्ण मंदिर बनने पर। दूसरा मंदिर में कुछ काम शेष रहने पर भी। संपूर्ण मंदिर बन जाने पर गर्भगृह में देव प्रतिष्ठा होने के बाद मंदिर के ऊपर कलश प्रतिष्ठा संन्यासी करते हैं। गृहस्थ द्वारा कलश प्रतिष्ठा होने पर वंशक्षय होता है। मंदिर का पूर्ण निर्माण हो जाने पर प्रतिष्ठा के साथ मंदिर के ऊपर कलश प्रतिष्ठा होती है। जहां मंदिर पूर्ण नहीं बना रहता है, वहां देव प्रतिष्ठा के बाद मंदिर का पूर्ण निर्माण होने पर किसी शुभ दिन में उत्तम मुहूर्त में मंदिर के ऊपर कलश प्रतिष्ठा होती है।

अयोध्या में पर्यटक सुविधा केंद्र व विश्व स्तरीय संग्रहालय बेजोड़ है। सरयू के घाटों के आसपास बुनियादी ढांचा सुविधाओं का विकास किया गया। ग्रीनफील्ड सिटी योजना, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम अंतरराष्ट्रीय हवा अड्डा, सरयू तट पर विकास, पैंसठ किमी लंबी लिंक रोड, पर्यटन केंद्र, पंचकोसी परिक्रमा मार्ग विकास आदि से अयोध्या की तस्वीर को भव्य बना रही है।

श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम और पूजन विधि सोलह जनवरी से शुरू हो गई थी। जिस प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा होनी थी,उसे अठारह जनवरी को गर्भ गृह में अपने आसन विराज मान किया गया था। पौष शुक्ल द्वादशी अभिजित मुहुर्त में दोपहर बारह बजकर बीस मिनट पर श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्राण प्रतिष्ठा का मुहूर्त वाराणसी के पुजारी श्रद्धेय गणेश्वर शास्त्री ने निर्धारित किया था। इन्होंने आपत्ति करने वाले शंकराचार्य को चुनौती दी थी। प्राण प्रतिष्ठा से जुड़े कर्मकांड की संपूर्ण विधि काशी के लक्ष्मीकांत दीक्षित द्वारा सम्पन्न करायी गई।

यह पूजन विधि सोलह जनवरी से शुरू होकर प्राण प्रतिष्ठा तक चली। जिस प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा होनी थी उसको अनेक प्रकार से निवास कराया गया। इस पूजा पद्यति में अधिवास कहते हैं। इसके तहत प्राण प्रतिष्ठा की जाने वाली प्रतिमा का जल में निवास, अन्न में निवास, फल में निवास, औषधि में निवास, घी में निवास, शैय्या निवास, सुगंध निवास समेत अनेक प्रकार के निवास कराए जाते हैं। यह कठिन

प्रक्रिया थी। डेढ़ सौ से अधिक परंपराओं के संत धर्माचार्य, आदिवासी, गिरिवासी, समुद्रवासी, जनजातीय परंपराओं के संत महात्मा कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। अयोध्या में प्रभु श्रीराम के अवतार लेने से पहले यह चक्रवर्ती सम्राटों की वैभवशाली राजधानी थी। प्रभु के अवतार ने इसे आध्यात्मिक रूप से भी दिव्य बना दिया था। किंतु मध्यकाल में इसे विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण झेलने पड़े। पांच सौ वर्षों बाद यहां जीर्णोद्धार प्रारंभ हुआ है। भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण कार्य प्रगति पर है। किंतु अयोध्या का विकास यहीं तक सीमित नहीं है। इसको विश्वस्तरीय पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। हजारों करोड़ रुपये की विकास योजनाओं का क्रियान्वयन चल रहा है। इसमें मूलभूत सुविधाओं का विकास, ढांचागत निर्माण कार्य, शिक्षा स्वास्थ्य, सड़क कनेक्टिविटी आदि सभी क्षेत्र शामिल है। अयोध्या मास्टर प्लान में सभी विकास परियोजनाओं को शामिल किया गया है। इसमें पुरातत्व महत्व के मंदिरों और परिसरों का जीर्णोद्धार व सौंदर्यीकरण शामिल है। बीस हजार करोड़ रुपए के इन प्रोजेक्ट में क्रूज पर्यटन परियोजना, राम की पैड़ी परियोजना, रामायण आध्यात्मिक वन, सरयू नदी आइकॉनिक ब्रिज, प्रतिष्ठित संरचना का विकास पर्यटन सर्किट का विकास, ब्रांडिंग अयोध्या, चौरासी कोसी परिक्रमा के भीतर दो सौ आठ विरासत परिसरों का जीर्णोद्धार, सरयू उत्तर किनारे का विकास आदि शामिल हैं। इसके साथ ही अयोध्या को आधुनिक स्मार्ट सिटी के तौर पर विकसित किया जा रहा है। सरकार ने सैकड़ों पर्यटकों के सुझाव के बाद एक विजन डॉक्यूमेंट भी तैयार किया था। अयोध्या के विकास की परिकल्पना एक आध्यात्मिक केंद्र वैश्विक पर्यटन हब और एक स्थायी स्मार्ट सिटी के रूप में की गई। कनेक्टिविटी में सुधार के प्रयास जारी है। इनमें एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन के विस्तार, बस स्टेशन, सड़कों और राजमार्गों व ढांचा परियोजनाओं का निर्माण शामिल है। ग्रीनफील्ड टाउनशिप भी प्रस्तावित है। इसमें तीर्थ यात्रियों के ठहरने की सुविधा, आश्रमों के लिए जगह, मठ, होटल, विभिन्न राज्यों के भवन आदि शामिल हैं। अयोध्या में पर्यटक सुविधा केंद्र व विश्व स्तरीय संग्रहालय बेजोड़ है। सरयू के घाटों के आसपास बुनियादी ढांचा सुविधाओं का विकास किया गया। ग्रीनफील्ड सिटी योजना, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा,सरयू तट पट विकास, पैंसठ किमी लंबी रिंग रोड, पर्यटन केंद्र, पंचकोसी परिक्रमा मार्ग विकास आदि से अयोध्या की तस्वीर को भव्य बना रही है। अयोध्या को स्मार्ट व विश्व स्तरीय नगर बनाने का कार्य प्रगति पर है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्या आने वाले समय में वैश्विक मानचित्र में एक नया स्थान बनाने जा रहा है। अयोध्या विश्वस्तरीय पर्यटन केन्द्र के साथ साथ शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का भी एक बड़ा केन्द्र बनाया जाएगा। जब प्रभु श्रीराम वनवास के दौरान चित्रकूट और दण्डकारण्य होते हुए सुदूर दक्षिण में श्रीलंका तक गये थे, उस समय उन्होंने भारत की जो सांस्कृतिक सीमा तय की थी, वही आज भी है। भगवान श्रीकृष्ण ने पांच हजार वर्ष पूर्व भारत की जो सांस्कृतिक सीमा तय की थी, वही आज भी है। एक समय भारत में अलग–अलग राजनीतिक इकाइयां थीं, लेकिन तब भी भारत सांस्कृतिक रूप से एक था। केरल से निकलकर एक संन्यासी ने भारत की सांस्कृतिक एकता के लिए देश के चार कोनों में चार पीठों की स्थापना की। श्रद्धालु रामेश्वरम में गंगोत्री से तथा केदारनाथधाम में सुदूर दक्षिण से आकर जल चढ़ाते हैं और भारत की सांस्कृतिक एकता को मजबूत करते हैं।

सात वर्ष पहले रामनवमी के अवसर पर कुछ हजार श्रद्धालु आये थे। जबकि पिछली रामनवमी के अवसर पर एक दिन में पैंतीस लाख श्रद्धालु अयोध्या आये। अयोध्या लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी तथा गोरखपुर से फोर लेन की कनेक्टिविटी से जुड़ चुका है। अयोध्या को रेलवे की डबल लाइन से जोड़ा गया है। अयोध्या में अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का निर्माण भी हुआ है। प्रदेश सरकार से अन्तरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के प्रथम, द्वितीय व तृतीय चरण के कार्यों के लिए आठ सौ एकड़ भूमि की मांग की गयी थी। अभी इस एयरपोर्ट के प्रथम चरण का कार्य सम्पन्न हुआ है, लेकिन प्रदेश सरकार ने एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इण्डिया को पूरी भूमि उपलब्ध करा दी। एयरपोर्ट की कनेक्टिविटी को फोर लेन से जोड़ा जा चुका है। अयोध्या में श्रीराम पथ,भक्ति पथ,धर्म पथ तथा श्रीराम जन्मभूमि पथ को चौड़ा किया गया। अयोध्या में फाइव स्टार तथा सेवेन स्टार होटल बन रहे हैं। अयोध्या में आठ होटल बन चुके हैं तथा लगभग पच्चीस नये प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। पंच कोसी, चैदह कोसी तथा चैरासी कोसी परिक्रमा मार्गों के पुनरुद्धार के कार्य हुए हैं। यहां क्रूज सेवा की सोच साकार हुई है।

अयोध्या शोध संस्थान के माध्यम से अयोध्या के पुरातात्विक महत्व को उजागर करने तथा मन्दिर म्यूजियम के माध्यम से भारत में मन्दिरों की शैली दर्शाने का कार्य किया गया।

प्रभु के अवतार ने इसे आध्यात्मिक रूप से भी दिव्य बना दिया था। किंतु मध्यकाल में इसे विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण झेलने पड़े। पांच सौ वर्षों बाद यहां जीर्णोद्धार प्रारंभ हुआ है।

भारतीय संविधान : शिरोधार्य 'रामत्व'

प्रवीण गुगनानी

रामराज्य एक सनातनी शासन पद्धति है, इस तथ्य को गर्वपूर्वक स्वीकारना चाहिये। जब हेग कन्वेंशन में, युद्ध नियम हमारे सनातनी शास्त्रों से ग्रहण किए जा सकते हैं तो फिर रामराज्य को सनातनी मानने में संकोच क्यों? यह सर्वसमावेशी, सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी शासन पद्धति है। भारतीय समाज में व भारतीय संविधान में "श्रीराम" का केवल नाम ही नहीं होना चाहिये है। भारतीय संविधान व समाज में श्रीराम एक अवधारणा, एक संस्थान, एक स्थापना, एक ऊर्जा स्रोत, एक प्रेरक तत्त्व, एक आधारभूत तत्व के रूप में स्थापित होना चाहिये। क्योंकि रामत्व ही तो कलियुग का आधार है। जब **"कलयुग केवल नाम अधारा, सिमर–सिमर नर उतरहिं पारा"** तो फिर हमारा संविधान व समाज भला किस प्रकार रामत्व से वंचित रह सकता है? और यह क्यों रामत्व से वंचित रहे? और, यदि यह रामत्व से दूरी बनाकर भी रखना चाहे तो भी कितने समय दूरी बनाकर रह सकते हैं? अंततोगत्वा तो भारतीय समाज व संविधान को राममय होना ही है। यही नियति है। यही लक्ष्य भी होना चाहिये। हमें हमारे समस्त संवैधानिक, सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक, पारिवारिक संस्थानों को रामत्व की स्थापना व आधार देना ही होगा। अपनी अपने पूजा स्थल में, पूजा पद्धति में राम को सम्मिलित करने की बात नहीं की जा रही है। जीवन पद्धति में श्रीराम को लाने विषयक है यह। यही सटीक व समीचीन तथ्य है आज एक युग का।

कलियुग के हम लोग तनिक अधिक ही स्वार्थी व तनिक अधिक ही स्वयंस्थ हैं, इसलिए राम नाम को हम "Abstract Entity" के रूप में सदैव ही मानते हुए आगे बढ़ते रहते हैं। यह स्वाभाविक भी है। कलियुग के हम भारतीय; स्वयं में, समाज में, संविधान में, रामत्व को अर्थात् राम के अंतर्त्तव को विराजित करते रहे हैं, कर पाते हैं, कर रहे हैं; तब ही तो हमारे कालखंड में हम श्रीराम जन्मभूमि का भव्य निर्माण, उसका लोकार्पण अपने नयनों से साक्षात देख पा रहे हैं। रामत्व ने ही हमें सक्षम बनाया कि हम आठ सौ वर्षों के पीढ़ियों के संघर्ष के पश्चात अपने संघर्ष को सफल होते हुए देख पा रहे हैं! हम सफल हुए हैं क्योंकि हमारा समाज रामत्व से सराबोर हो रहा है। राममंदिर का निर्माण हुआ क्योंकि हमारा रामत्व चैतन्य–जागृत हो रहा है।

हमारा संविधान केवल श्रीराम, माता सीता व भैया के लक्ष्मण के चित्र को समेटे हुए नहीं है, यह संविधान रामत्व के भाव को भी शिरोधार्य किए रहना चाहता है। हमारे संविधान का मर्म रामत्व में सराबोर रहना चाहता है। इस तथ्य को जो भारतीय शासक चिन्हित करेगा, पहचानेगा व क्रियान्वित करेगा वही सच्चे अर्थों में भारत का स्वाभाविक व सर्वाधिक योग्य सम्राट होगा। रामत्व, भारतीय समाज, संविधान, निशान के कण–कण मन–मन में धारित हो, मनःस्थ हो, तनस्थ हो इसी में राष्ट्रसिद्धि निहित है। श्रीराम ही तो भारत के सांस्कृतिक, नैतिक और राजनैतिक मूल्यों के आदर्श, प्रेरक व स्रोत रहे हैं। उनका व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन हमारे संवैधानिक मूल्यों के समरूप हैं। यदि हम श्रीराम के जीवन चरित के अनुरूप अपने संविधान की कल्पना करें व शेष श्रीराम चरित को भी संविधान में वस्तुतः लागू करें तो हमें विश्व का एक श्रेष्ठतम, कालसिद्ध व कालजयी संविधान मिल सकता है। उस संविधान में वैश्विकता भी प्रदर्शित होगी व समूचे विश्व में वह लागू भी होगा। श्रीराम के उनके भवन में विराजने के पश्चात अब भारतीय समाज, संघ, सत्ता, शीर्ष का यही लक्ष्य होना चाहिये कि संविधान में रामत्व अपने संपूर्ण रूप में विराजित हो। हमारे संविधान में श्रीराम की दयालुता, समरसता, समाज एकता, न्यायप्रियता, कला प्रियता, कर्तव्य परायणता, अधिकार सिद्धता, स्थानीयता, वैश्विकता, भूमि निष्ठा, नभ प्रियता, वैज्ञानिकता, आदि आदि का समावेश हो यही अब प्रत्येक भारतीय का लक्ष्य होना चाहिये।

यह संयोग एक रहस्य लग सकता है कि भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों वाले अंश में ही श्रीराम, माता सीता व भैया लक्ष्मण का चित्र ही क्यों अंकित हुआ? किसके मानस में यह क्यों आया यह कभी किसी ने कहा नहीं। श्रीराम के चित्र का योजन–नियोजन मौलिक अधिकारों वाले भाग में करने की चर्चा किसी ने नहीं की; अर्थात् यह अनायास, निष्प्रयास, संयोगवश ही हुआ है! इस संयोग के निहितार्थ हम भारतीयों को समझ लेने चाहिये। भारतीय संविधान के प्राण उसके मौलिक अधिकारों वाले अंश में व उन श्रीराम में ही बसा करते हैं जिनका चित्र–चरित इस अंश में सारगर्भित है।

संविधान के श्रीराम जी वाले चित्र के साथ कुछ अधिकारों की सुनिश्चितता (गारंटी) व राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों की अवधारणा मिलती है। संविधान के इस रामधारी अंश से ही हमें धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की नहीं अपितु रामधर्म आधारित संविधान, समाज व राष्ट्र की प्रेरणा मिलती है। हमें धर्म निरपेक्ष नहीं अपितु राम सापेक्ष राष्ट्र चाहिये, क्योंकि राम ही मानवीयता है।

भारतभूमि को, राम को, रामत्व को, केवल सनातन मानना छोड़ना होगा। हम रामत्व को सीमित न करें उन्हें उनके अपरिमित वाले स्वरूप में ही स्वीकारें। भारतभूमि के प्रत्येक जीव, जंतु, मानव हेतु रामत्व समावेशित समाज, संविधान, निशान देना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिये।

समरसता रामत्व का मूल है। श्रीराम की निषादराज से मित्रता, माता शबरी के झूठे बेरों को खाना, जटायु को उसके अंतिम समय में स्नेह देना, सुग्रीव से मित्रता, हनुमान को गले लगाना आदि आदि जैसी घटनाएं उनकी कथनी व करनी में व्याप्त समरसता का ही द्योतक थी। श्रीराम द्वारा वनवासी हनुमान को भैया लक्ष्मण से भी अधिक प्रिय बताना और यह कहना कि – "सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना"; उनकी विशालता का प्रतीक था। श्रीराम का हनुमान को अपने सहोदर से अधिक महत्व देने का दृष्टांत आज के शासक वर्ग को व समाज के अग्रणी वर्ग हेतु प्रेरक तत्त्व होना चाहिये। जब शबरी के आंगन में बैठकर श्रीराम उसके झूठे बेर आनंदपूर्वक खा रहे होते हैं तब शबरी भाव विभोर होकर कहती है – **"अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी।** तब वनवासी राम उत्तर देते हैं – **कह रघुपति सुनू भामिनी बाता। मानाउँ एक भागति कर नाता।। जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धनबल परिजन गुन चतुराई।। भगति हीन नर सोइह कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।"** अर्थात्– भक्ति का ही संबंध है, जिसे वे मानते हैं। जाति, पांति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, कुटुम्ब, गुण और चतुरता– ये सब गुण लक्षण होने पर भी भक्ति से रहित मनुष्य निर्जल बादल सदृश ही लगता है। और आगे देखिए, माता जानकी को रावण से बचाने के संघर्ष में जब जटायु के प्राण संकट में आ गये होते हैं तब गिद्धराज जटायु को अपनी गोद में लेकर स्नेह व आदर देते हैं। इसके बाद वे जटायु का अंतिम संस्कार, पुत्रभाव से विधिपूर्वक करते हैं। रावण व ताड़का जैसे अपने शत्रुओं को युद्ध में वीरतापूर्वक पराजित करना और फिर उनके सम्मानपूर्ण अंतिम संस्कार की व्यवस्था करना, जैसे कार्य उनके बड़प्पन व विशाल हृदयता को प्रकट करते हैं। शासक में, संविधान में समाज में रामत्व इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि राम ही शत्रुता भाव पर नैतिकता को महत्व देते थे। स्मरण कीजिए जब युद्धभूमि में दशानन का मृत शरीर पड़ा हुआ था तब उसका सहोदर विभीषण रावण के अंतिम संस्कार के लिए भी संकोच करते दिखाई देते हैं तब श्रीराम मर्यादा व्यक्त करते हुए कहते हैं – **"मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नः प्रयोजनम्। क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।।"** – बैर जीवन काल तक ही रहता है। मरने के बाद उस बैर का अंत हो जाता है। वर्तमान समय में युद्ध में नियमों को बनाये रखने व मृत शरीरों को ससम्मान अंतिम संस्कार हेतु हमारी पीढ़ी ने "हेग कन्वेंशन" में प्रस्ताव पारित करके ये व्यवस्था की है। सनातन में रामत्व ने इन व्यवस्थाओं को हज़ारों वर्ष पूर्व लागू किया हुआ था। युद्ध भूमि में श्रीराम ने अपने शत्रुओं का वीरोचित संहार तो किया किंतु उसके बाद उन्होंने अपने शत्रुओं के ससम्मान, विधिपूर्व अंतिम संस्कार, उनके असहाय परिजनों की देखरेख, उनके राज्य की शासन व्यवस्था की चिंता आदि सभी कार्य ऐसे किए हैं कि हेग के प्रावधान रामायण से उठाये हुए ही प्रतीत होते हैं।

रामराज्य सनातनी अवधारणा होकर आज के युग में भी एक सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था होने के साथ-साथ इतनी विकसित भी है कि इसके शासन के अंतर्गत सभी मत, पंथ, संप्रदाय के लोग अपनी-अपनी पूजा पद्धति का पालन करते हुए निवासरत हो सकते हैं।

संविधान व समाज में रामत्व की स्थापना आज के युग का एक महत्वाकांक्षी भाव इस लिए भी है कि वर्तमान कालखंड में हमें रामराज्य की सर्वाधिक आवश्यकता है। निस्संदेह रामराज्य एक सनातनी अवधारणा है व रामराज्य सनातन जनित ही एक सर्वोत्कृष्ट शासन पद्धति है, तथापि वर्तमान समय में भी यह सर्वाधिक समीचीन है। वस्तुतः समग्र सनातन सदैव ही प्रासंगिक बना रहता है, तभी तो यह सनातन अर्थात् सदा सर्वदा नूतन कहलाता है। कुछ लोग और यहां तक कि हमारे कुछ विद्वान भी, रामराज्य के संदर्भ में स्पष्टीकरण देते दिखाई देते हैं कि – राम राज्य कोई धार्मिक अवधारणा नहीं है! यह सरासर झूठ है! रामराज्य सनातनी अवधारणा ही है! यही सत्य है। रामराज्य सनातनी अवधारणा होकर आज के युग में भी एक सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था होने के साथ साथ इतनी विकसित भी है कि इसके शासन के अंर्तगत सभी मत, पंथ, संप्रदाय के लोग अपनी अपनी पूजा पद्धति का पालन करते हुए निवासरत हो सकते हैं। रामराज्य में कहीं भी धर्म के आधार पर विभाजन व भेदभाव की स्थिति देखने को नहीं मिलती है। यद्दपि, रामराज्य सनातनी अवधारणा है तथापि यह एक वसुधैव कुटुम्बकम् व प्राणी मात्र के प्रति संवेदनशीलता का भाव रखने के गुण के कारण सर्व स्वीकार्य शासन प्रणाली है। जब हेग कन्वेंशन में युद्ध के नियम भारतीय शास्त्रों से ग्रहण किए जा सकते हैं तो भला भारतीय शासन पद्धति में रामराज्य के गुणों के समावेशन से हमें क्योंकर आपत्ति होनी चाहिये?

शासन में रामत्व इसलिए भी आवश्यक है श्रीराम ने स्थानीय व्यक्ति को ही राजा बनने को प्राथमिकता देकर लोकतंत्र के एक आवश्यक तत्त्व का सरंक्षण किया था। इसी भाव की रक्षा करते हुए श्रीराम बाली के निधन के पश्चात सुग्रीव को किष्किन्धा का राजपाट सौंपते हैं, तो बाली पुत्र अंगद को सुग्रीव का उत्तराधिकारी भी घोषित करते हैं। जब लंका में श्रीराम विजयी होते हैं, तब वे न केवल लक्ष्मण से कहकर विभिषण का राजतिलक करवाते हैं, अपितु विभिषण से घर की सभी महिलाओं को सांत्वना, सरंक्षण व सद्भावपूर्ण आचरण देने का अनुरोध भी करते हैं। हमारी शासन पद्धति को रामत्व से सराबोर करने का सीधा सा अर्थ होगा, शासन को और अधिक सर्वसमावेशी, सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी शासन पद्धति बनाना!!

सामाजिक न्याय के प्रणेता

जननायक कर्पूरी ठाकुर

नरेन्द्र मोदी

हमारे जीवन पर कई लोगों के व्यक्तित्व का प्रभाव रहता है। जिन लोगों से हम मिलते हैं, हम जिनके संपर्क में रहते हैं, उनकी बातों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। लेकिन कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जिनके बारे में सुनकर ही आप उनसे प्रभावित हो जाते हैं। मेरे लिए ऐसे ही रहे हैं जननायक कर्पूरी ठाकुर।

आज कर्पूरी बाबू की 100वीं जन्म–जयंती है। मुझे कर्पूरी जी से कभी मिलने का अवसर तो नहीं मिला, लेकिन उनके साथ बेहद करीब से काम करने वाले कैलाशपति मिश्र जी से मैंने उनके बारे में बहुत कुछ सुना है। सामाजिक न्याय के लिए कर्पूरी बाबू ने जो प्रयास किए, उससे करोड़ों लोगों के जीवन में बड़ा बदलाव आया। उनका संबंध नाई समाज, यानि समाज के अति पिछड़े वर्ग से था। अनेक चुनौतियों को पार करते हुए उन्होंने कई उपलब्धियों को हासिल किया और जीवनभर समाज के उत्थान के लिए काम करते रहे।

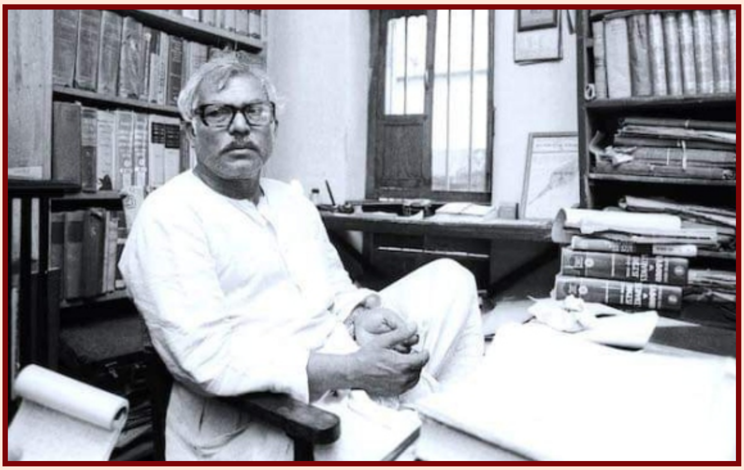

जननायक कर्पूरी ठाकुर जी का पूरा जीवन सादगी और सामाजिक न्याय के लिए समर्पित रहा। वे अपनी अंतिम सांस तक सरल जीवनशैली और विनम्र स्वभाव के चलते आम लोगों से गहराई से जुड़े रहे। उनसे जुड़े ऐसे कई किस्से हैं, जो उनकी सादगी की मिसाल हैं।

उनके साथ काम करने वाले लोग याद करते हैं कि कैसे वे इस बात पर जोर देते थे कि उनके किसी भी व्यक्तिगत कार्य में सरकार का एक पैसा भी इस्तेमाल ना हो। ऐसा ही एक वाकया बिहार में उनके सीएम रहने के दौरान हुआ। तब राज्य के नेताओं के लिए एक कॉलोनी बनाने का निर्णय हुआ था, लेकिन उन्होंने अपने लिए कोई जमीन नहीं ली। जब भी उनसे पूछा जाता कि आप जमीन क्यों नहीं ले रहे हैं, तो वे बस विनम्रता से हाथ जोड़ लेते। 1988 में जब उनका निधन हुआ तो कई नेता श्रद्धांजलि देने उनके गांव गए। कर्पूरी जी के घर की हालत देखकर उनकी आंखों में आंसू आ गए कि इतने ऊंचे पद पर रहे व्यक्ति का घर इतना साधारण कैसे हो सकता है!

कर्पूरी बाबू की सादगी का एक और लोकप्रिय किस्सा 1977 का है, जब वे बिहार के सीएम बने थे। तब केंद्र और बिहार में जनता सरकार सत्ता में थी। उस समय जनता पार्टी के नेता लोकनायक जयप्रकाश नारायण यानि जेपी के जन्मदिन के लिए कई नेता पटना में इकट्ठा हुए। उसमें शामिल मुख्यमंत्री कर्पूरी बाबू का कुर्ता फटा हुआ था। ऐसे में चंद्रशेखर जी ने अपने अनूठे अंदाज में लोगों से कुछ पैसे दान करने की अपील की, ताकि कर्पूरी जी नया कुर्ता खरीद सकें। लेकिन कर्पूरी जी तो कर्पूरी जी थे। उन्होंने इसमें भी एक मिसाल कायम कर दी। उन्होंने पैसा तो स्वीकार कर लिया, लेकिन उसे मुख्यमंत्री राहत कोष में दान कर दिया।

सामाजिक न्याय तो जननायक कर्पूरी ठाकुर जी के मन में रचा–बसा था। उनके राजनीतिक जीवन को एक ऐसे समाज के निर्माण के प्रयासों के लिए जाना जाता है, जहां सभी लोगों तक संसाधनों का समान रूप से वितरण हो और सामाजिक हैसियत की परवाह किए बिना उन्हें अवसरों का लाभ मिले। उनके प्रयासों का उद्देश्य भारतीय समाज में पैठ बना चुकी कई असमानताओं को दूर करना भी था।

अपने आदर्शों के लिए कर्पूरी ठाकुर जी की प्रतिबद्धता ऐसी थी कि उस कालखंड में भी जब सब ओर कांग्रेस का राज था, उन्होंने कांग्रेस विरोधी लाइन पर चलने का फैसला किया। क्योंकि उन्हें काफी पहले ही इस बात का अंदाजा हो गया था कि कांग्रेस अपने बुनियादी सिद्धांतों से भटक गई है।

कर्पूरी ठाकुर जी की चुनावी यात्रा 1950 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में शुरू हुई और यहीं से वे राज्य के सदन में एक ताकतवर नेता के रूप में उभरे। वे श्रमिक वर्ग, मजदूर, छोटे किसानों और युवाओं के संघर्ष की सशक्त आवाज बने। शिक्षा एक ऐसा विषय था, जो कर्पूरी जी के हृदय के सबसे करीब था। उन्होंने अपने पूरे राजनीतिक जीवन में गरीबों को शिक्षा मुहैया कराने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी। वे स्थानीय

भाषाओं में शिक्षा देने के बहुत बड़े पैरोकार थे, ताकि गांवों और छोटे शहरों के लोग भी अच्छी शिक्षा प्राप्त करें और सफलता की सीढ़ियां चढ़ें। मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने बुजुर्ग नागरिकों के कल्याण के लिए भी कई अहम कदम उठाए।

Democracy, Debate और Discussion तो कर्पूरी जी के व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा था। लोकतंत्र के लिए उनका समर्पण भाव, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ही दिख गया था, जिसमें उन्होंने अपने–आप को झोंक दिया। उन्होंने देश पर जबरन थोपे गए आपातकाल का भी पुरजोर विरोध किया था। जेपी, डॉ. लोहिया और चरण सिंह जी जैसी विभूतियां भी उनसे काफी प्रभावित हुई थीं।

समाज के पिछड़े और वंचित वर्गों को सशक्त बनाने के लिए जननायक कर्पूरी ठाकुर जी ने एक ठोस कार्ययोजना बनाई थी। यह सही तरीके से आगे बढ़े, इसके लिए पूरा एक तंत्र तैयार किया था। यह उनके सबसे प्रमुख योगदानों में से एक है। उन्हें उम्मीद थी कि एक ना एक दिन इन वर्गों को भी वो प्रतिनिधित्व और अवसर जरूर दिए जाएंगे, जिनके वे हकदार थे। हालांकि उनके इस कदम का काफी विरोध हुआ, लेकिन वे किसी भी दबाव के आगे झुके नहीं। उनके नेतृत्व में ऐसी नीतियों को लागू किया गया, जिनसे एक ऐसे समावेशी समाज की मजबूत नींव पड़ी, जहां किसी के जन्म से उसके भाग्य का निर्धारण नहीं होता हो। वे समाज के सबसे पिछड़े वर्ग से थे, लेकिन काम उन्होंने सभी वर्गों के लिए किया। उनमें किसी के प्रति रत्तीभर भी कड़वाहट नहीं थी और यही तो उन्हें महानता की श्रेणी में ले आता है।

हमारी सरकार निरंतर जननायक कर्पूरी ठाकुर जी से प्रेरणा लेते हुए काम कर रही है। यह हमारी नीतियों और योजनाओं में भी दिखाई देता है, जिससे देशभर में सकारात्मक बदलाव आया है। भारतीय राजनीति की सबसे बड़ी त्रासदी यह रही थी कि कर्पूरी जी जैसे कुछ नेताओं को छोड़कर सामाजिक न्याय की बात बस एक राजनीतिक नारा बनकर रह गई थी। कर्पूरी जी के विजन से प्रेरित होकर हमने इसे एक प्रभावी गवर्नेंस मॉडल के रूप में लागू किया। मैं विश्वास और गर्व के साथ कह सकता हूं कि भारत के 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालने की उपलब्धि पर आज जननायक कर्पूरी जी जरूर गौरवान्वित होते। गरीबी से बाहर निकलने वालों में समाज के सबसे पिछड़े तबके के लोग सबसे ज्यादा हैं, जो आजादी के 70 साल बाद भी बुनियादी सुविधाओं से वंचित थे।

हम आज सैचुरेशन के लिए प्रयास कर रहे हैं, ताकि प्रत्येक योजना का लाभ, शत प्रतिशत लाभार्थियों को मिले। इस दिशा में हमारे प्रयास सामाजिक न्याय के प्रति सरकार के संकल्प को दिखाते हैं। आज जब मुद्रा लोन से व्ठब्ैब्औरैज समुदाय के लोग उद्यमी बन रहे हैं, तो यह कर्पूरी ठाकुर जी के आर्थिक स्वतंत्रता के सपनों को पूरा कर रहा है। इसी तरह यह हमारी सरकार है, जिसने ैब्, ैज और व्ठब् त्मेमतअंजपवद का दायरा बढ़ाया है। हमें ओबीसी आयोग (दुख की बात है कि कांग्रेस ने इसका विरोध किया था) की स्थापना करने का भी अवसर प्राप्त हुआ, जो कि कर्पूरी जी के दिखाए रास्ते पर काम कर रहा है। कुछ समय पहले शुरू की गई पीएम–विश्वकर्मा योजना भी देश में ओबीसी समुदाय के करोड़ों लोगों के लिए समृद्धि के नए रास्ते बनाएगी।

पिछड़े वर्ग से ताल्लुक रखने वाले एक व्यक्ति के रूप में मुझे जननायक कर्पूरी ठाकुर जी के जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिला है। मेरे जैसे अनेकों लोगों के जीवन में कर्पूरी बाबू का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान रहा है। इसके लिए मैं उनका सदैव आभारी रहूंगा। दुर्भाग्यवश, हमने कर्पूरी ठाकुर जी को 64 वर्ष की आयु में ही खो दिया। हमने उन्हें तब खोया, जब देश को उनकी सबसे अधिक जरूरत थी। आज भले ही वे हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन जन–कल्याण के अपने कार्यों की वजह से करोड़ों देशवासियों के दिल और दिमाग में जीवित हैं। वे एक सच्चे जननायक थे।

दारा सिंह चौहान विधान परिषद सदस्य निर्वाचित

विधान परिषद में दारा सिंह चौहान निर्विरोध निर्वाचित घोषित हुए। भाजपा नेतृत्व को उन्होंने आभार व्यक्त किया है। इसके पूर्व भारतीय जनता पार्टी के विधान परिषद प्रत्याशी को मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य व श्री ब्रजेश पाठक सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति में अपना नामांकन दाखिल किया।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने प्रदेश मुख्यालय पर भाजपा के विधान परिषद सदस्य प्रत्याशी श्री दारा सिंह चौहान का अभिनन्दन करते हुए शुभकामनायें दी। इस अवसर पर प्रदेश के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री जेपीएस राठौर, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री ब्रज बहादुर, प्रदेश महामंत्री श्री गोविन्द नारायण शुक्ला, श्री संजय राय, प्रदेश मंत्री श्री शिवभूषण सिंह, श्री बसंत त्यागी, प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री डा. महेन्द्र सिंह, प्रदेश मीडिया सहप्रभारी श्री हिमांशु दुबे, क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री सहजानंद राय सहित बड़ी संख्या में पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

भाजपा विधानमंडल दल कार्यालय से मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य व श्री ब्रजेश पाठक, वित्त एवं संसदीय कार्यमंत्री श्री सुरेश खन्ना, निषाद पार्टी के अध्यक्ष डा. संजय निषाद, अपना दल (एस) के नेता श्री आशीष पटेल के साथ पार्टी प्रत्याशी अपना नामांकन पत्र दाखिल करने पहुंचे। नामांकन के दौरान बड़ी संख्या में राज्य सरकार के मंत्री गण, विधायक एवं अन्य वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे।

विकसित भारत के निर्माण में सबकी भागीदारी: सिंह

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर पार्टी के राज्यमुख्यालय पर झंडारोहण किया। इस अवसर पर प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह उपस्थित रहे। श्री चौधरी ने देश के 75 वे गणतंत्र दिवस के अवसर पर हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देते हुए कहा कि गणतंत्र दिवस लोकतांत्रिक मूल्यों, गणतंत्र की मजबूती व विकसित राष्ट्रनिर्माण में सभी के भागीदारी के संकल्प का दिन है।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि संविधान की स्थापना का यह राष्ट्रीय पर्व हम सभी को आत्मनिर्भर भारत निर्माण के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि हम सभी मिलकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत को विकसित भारत बनाने के संकल्प के साथ आगे बढ़े। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व परिवर्तन हो रहे है और हमारा देश विकसित देश बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र अपने लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ लगातार अग्रसरित है। उन्होंने कहा उत्तर प्रदेश नया उत्तर प्रदेश और विकसित प्रदेश बनकर जिस तेजी से देश के क्षितिज पर उभर रहा है, इससे प्रदेश मे रहने वाला हर व्यक्ति गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। सरकार की बेहतर नीति और मार्गदर्शन से प्रदेश में तेजी से आर्थिक विकास और सुरक्षा का वातावरण बना है। मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में प्रदेश भाजपा सरकार सभी को साथ लेकर 1 ट्रिलियन इकॉनोमी की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ रही है।

75वां गणतंत्र दिवस समारोह

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि गणतंत्र दिवस स्वतंत्रता सेनानियों का त्याग एवं बलिदान का स्मरण कराने के साथ हमें संविधान के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है। अमृतकाल का विशिष्ट कालखंड हमें आत्मचिन्तन के साथ महान देशभक्तों के सपनों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्ध होने की प्रेरणा देता है। उन्होंने गणतंत्र दिवस पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए लोगों से अपील करते हुए कहा कि हम सभी मिलकर संविधान के सम्मान व देश की मजबूती के प्रयासों में अपना योगदान करें।

इस अवसर पर पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती कमलावती सिंह, प्रदेश महामंत्री श्री गोविंद नारायण शुक्ला व श्री सुभाष यदुवंश, प्रदेश मीडिया सहप्रभारी श्री हिमांशु दुबे, प्रदेश मुख्यालय प्रभारी श्री भारत दीक्षित, सह प्रभारी श्री अतुल अवस्थी, चौधरी श्री लक्ष्मण सिंह, श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव, सहित कई प्रमुख नेता पार्टी पदाधिकारी व बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

गन्ना मूल्य वृद्धि : किसान कल्याणकारी निर्णय

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने यूपी कैबिनेट द्वारा गन्ना मूल्य में बढ़ोतरी के निर्णय के लिए मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी सहित प्रदेश कैबिनेट को धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया। श्री चौधरी ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार तथा मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार किसानों की आय दोगुनी करने की प्रतिबद्धता के साथ लगातार काम कर रही है। इसी क्रम में मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में प्रदेश की कैबिनेट द्वारा पेराई सत्र 2023–24 हेतु एसएपी के निर्धारण के अनुसार गन्ना मूल्य में 20 रूपये प्रति कुन्तल की बढोत्तरी तथा चीनी मिलों द्वारा किसानों को देय गन्ना मूल्य के एक मुश्त भुगतान का निर्णय ऐतिहासिक है।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करते हुए उपज के समर्थन मूल्य में वृद्धि से किसानों की आय बढाने का काम भी किया गया। भाजपा सरकारों की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से किसानों की आर्थिक व सामाजिक उन्नति भी संभव हुई तथा लगातार गन्ना मूल्य में वृद्धि तथा चीनीं मिलों से किसानों के रिकार्ड भुगतान से किसान की आत्मनिर्भरता से राष्ट्र की आत्मनिर्भरता की ओर देश बढा है।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने इस ऐतिहासिक निर्णय के लिए मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि अन्त्योदय पथ पर चलते हुए किसान की खुशहाली से भाजपा सरकार में अन्त्योदय लक्ष्य पूर्ण हो रहा है।

गन्ना मूल्य बढ़ोत्तरी से किसानों में हर्ष है। किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष कामेश्वर सिंह ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि किसान हितकारी सरकार का अभिनन्दन है।

बुलन्दशहर में मा0 नरेन्द्र मोदी जी रैली

उत्तर प्रदेश गणतंत्र दिवस परेड, लखनऊ

गणतंत्र दिवस ध्वजारोहण, भाजपा मुख्यालय, लखनऊ

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2022-23
जनवरी द्वितीय 2023 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।